# श्री 24 तीर्थंकर महादेवी सरस्वती प्रमुख तीर्थ देव-देवी महापूजन

सौजन्यः राजश्री-नवीन शाह

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

# TABLE OF CONTENTS


| | |
|---|---|
| श्री नमस्कार महामंत्र | 5 |
| भगवान श्री राम स्तुति | 8 |
| भगवान श्री कृष्ण स्तुति | 8 |
| भगवान श्री शिव स्तुति | 9 |
| पूजन पूर्व भूमि शुद्धि-देह शुद्धि रक्षाकरण क्रिया | 11 |
| २४ तीर्थंकर | 21 |
| श्री सरस्वती देवी महापूजन विधि | 33 |
| श्री सरस्वती स्तत | 34 |
| पूजनः नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः | 35 |
| श्री शारदा स्तोत्र | 41 |
| श्री बप्पभट्टि सूरिश्वर विरचित श्री सरस्वती कल्प के महाप्रभावशाली मंत्र | 43 |
| **SHREE SARASWATI DEVI MAHAPOOJAN VIDHI** | 45 |
| **SHREE SARASWATI STAVA** | 46 |
| **SHREE SHARDA STOTRA** | 55 |
| **NAMASKAR MAHAMANTRA** | 58 |
| **UVASAGGHARAM STOTRA** | 60 |
| **BRUHATCHHANTI STOTRA** | 65 |


Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

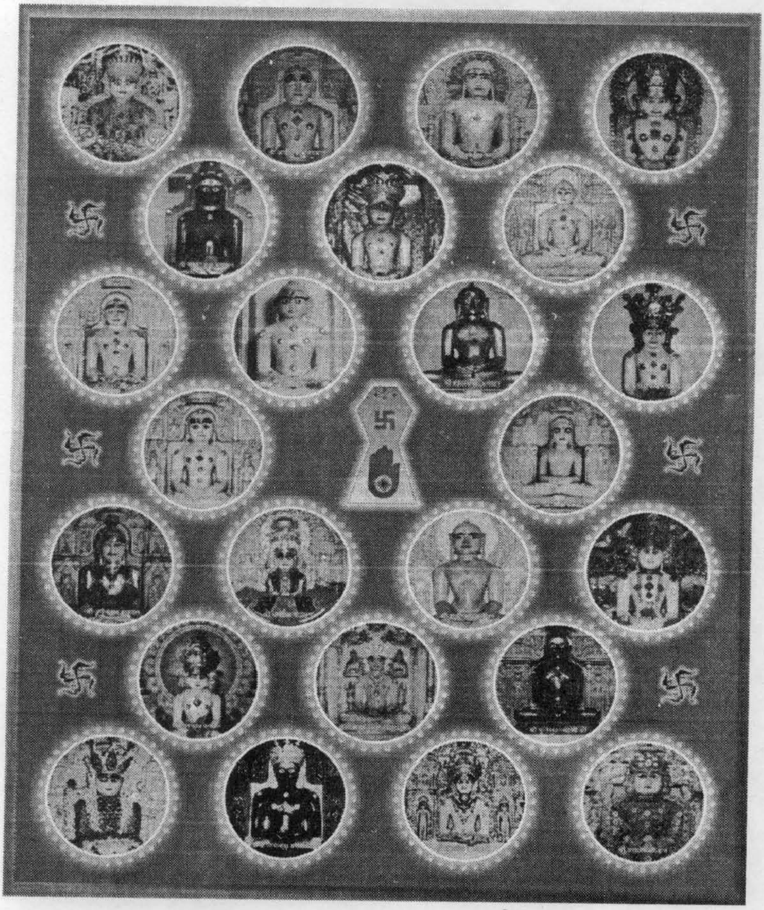



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

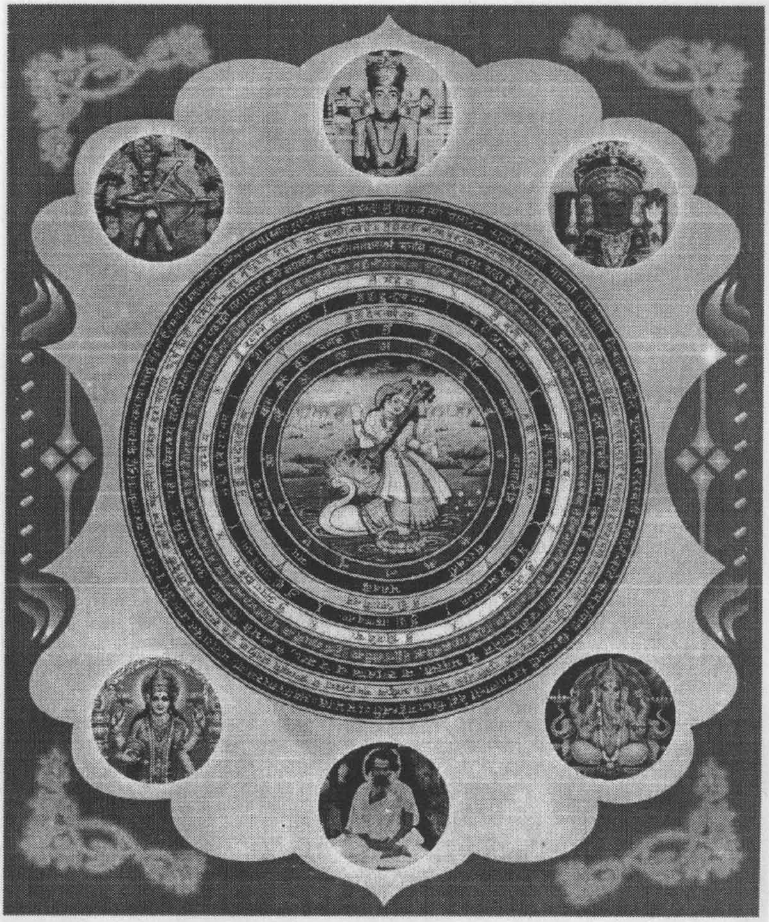



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

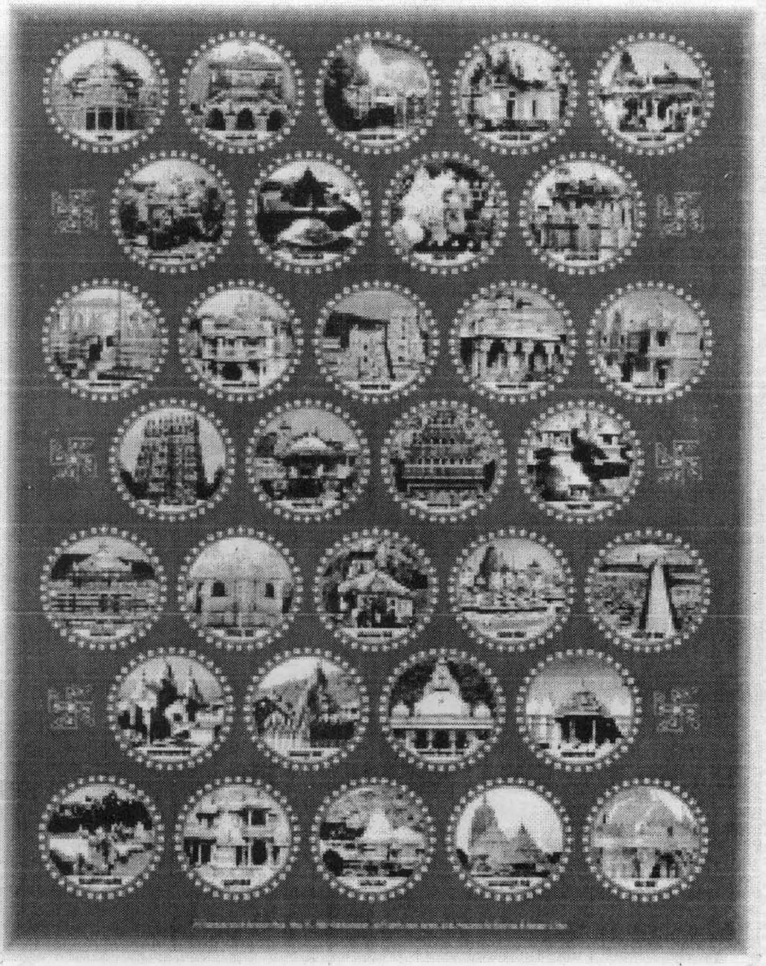



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

# " श्री मंगलाचरण "

## श्री नमस्कार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं

ऐसो पंचणमुक्कारो सव्वपावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ।।

ॐ णमो अरिहंताणं
ॐ णमो सिद्धाणं
ॐ णमो आयरियाणं
ॐ णमो उवज्झायाणं
ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं
ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ॐ ह्रीँ णमो उवज्झायाणं
ॐ ह्रीँ णमो लोए सव्वसाहूणं
||अर्हंतो भगवंत इंद्र महिता, सिद्धाश्च सिद्धि स्थिताः
आचार्यो जिनशासनोन्नतिकरा, पूज्या उपाध्यायकाः
श्री सिद्धांत सुपाठका मुनिवराः, रत्नत्रयाराधिकाः
पञ्चैः ते परमेष्ठिनः प्रति दिनं कुर्वंतो वो मंगलम्||
||ॐकार बिंदु संयुतं नित्यं ध्यायंति योगिनः
कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमो नमः||

||मंगलं भगवान वीरोः मंगलं गौतम प्रभुः
मंगलं स्थूलिभद्राद्याः, जैन धर्मोस्तु मंगलम्||

||सर्वारिष्ट प्रणाशिनैः सर्वभिष्टार्थ दायिनेः
सर्वलब्धि निधानाय गौतम स्वामिने नमः||

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात||

|| वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटिसमप्रभ।
निर्विघ्नं कुरू मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा||
एकदन्तं शूर्पकर्णं गजवक्रं चतुर्भुजम्।
पाशमं कुशधरं देवं ध्यायेत् सिद्धि विनायकम्||



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कर्पूरगौरं करूणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम।
सदावसंतं हृदयार्विन्दे भवं भवानी सहितं नमामि॥
गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफुल चारू भक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाश कारकं, नमामि विघ्नेश्वर पाद पंकजम्॥

❖ ❖ ❖



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

# भगवान श्री राम स्तुतिः

लोकाभिरामं रणरंगधीरं, राजीव नेत्रं रघुवंशनाथम्।
कारूण्यरूपं करूणाकरं तं, श्री रामचन्द्र शरणं प्रपद्ये॥
मनोजयं मरूततुल्य वैगं, जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथ मुख्यं, श्री रामदूतं शरणं प्रपद्ये॥
राजीव नैन धरे धनु सायक, भक्त विपत्ति भंजन सुखदायक।
मंगलभवन अमंगलहारी, द्रवउ सो दशरथ अजिर बिहारी॥

❖ ❖ ❖

# भगवान श्री कृष्ण स्तुतिः

अधरं मधुरं वदनं मधुरं, नयनं मधुरं हसितं मधुरम्।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं, मथुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥
वचनं मधुरं, चरितं मधुरं, वसनं मधुरं वलितं मधुरम्।
चलितं मधुरं, भ्रमितं मधुरं, मथुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥
वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः, पाणिमर्धुरः पादौ मधुरौ।
नृत्य मधुरं सख्यं मधुरं, मथुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥
गीतं मधुरं पीतं मधुरं, भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम्।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं, मथुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥
करणं मधुरं, तरणं मधुरं, हरणं मधुरं स्मरणं मधुरम्।



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वमितं मधुरं शमितं मधुरं, मथुराधिपतेर खिलं मधुरम्॥
गुंजामधुरा, माला मधुरा यमुना मधुरा बीची मधुरा।
सलिलं मधुरं कमल मधुरं, मथुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥
गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं मुक्तं मधुरम्।
दुष्टं मधुरं शिष्ट मधुरं, मथुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥
गोपा मधुरा गावो मधुरा, यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा।
दलित मधुरं फलित मधुरं, मथुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥

॥कृष्णं वंदे जगद्गुरुम॥

## भगवान शिव की स्तुतिः

ॐ वन्दे देव उमापतिं सुरगुरं वन्दे जगत कारणम्।
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधर वंदे पशुनापतिं॥
वन्दे सूर्य शंशांक वर्हिननयनं, वन्दे मुकुन्द प्रियम्।
वन्दे भक्त जनाश्रय च वरदं, वन्दे शिवं शंकरम्॥

ॐनमो नारायणाय
श्रीमन्नारायण चरणौशरणं प्रपद्ये।
श्रीमते नारायण नमः॥

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुखः भाग भवेत्॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुरुर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णु: गुरुर्देवो महेश्वर:।
गुरु: साक्षात्परब्रह्म तस्मै: श्री गुरवे नम:॥
अज्ञान तिमिरान्धस्य, ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नम:॥

❖ ❖ ❖



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ऐँ नमः॥

# पूजन पूर्व भूमि-शुद्धि-देह-शुद्धि-रक्षाकरण क्रिया

## (अ) भूमि शुद्धिकरण:

सभी को आश्रय प्रदान करने वाली धरती माता के समान है। पंचतत्वों में पृथ्वीतत्व देव-तुल्य है। ऐसी भूमि पर बैठकर शांति-समृद्धि-ऋद्धि-वृद्धि हेतु मंगल क्रियाअें करनी है। इस भूमि में से कोई उपद्रव न हो इसके लिये भूमि की बहुमान पूर्वक शुद्धीकरण करने की क्रिया निम्न मंत्र से की जाती है :

॥ॐ भूरसि भूतधात्रि! सर्व भूतहिते! भूमि शुद्धिं कुरू-कुरू स्वाहा।
यावदहं पूजां करिष्ये तावत् सर्व जनानां विध्नान् विनाशय स्थिरी भव स्वाहा॥

(स्वर्ण-जल, सुगंधि-जल वासक्षेप युक्त, का पूजन भूमि पर छंटकाव करना)

## (आ) सकलीकरण:

(शरीर के मुख्य अंगों को जागृत करने की क्रिया)

मानव देह पंच तत्व का बना हुआ है- पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं आकाश- ये तत्व विषम न बन जाये तथा देह में संतुलन बना रहे - इसके लिये पूर्वाचार्यों-ऋषि-मुनियों ने पाँच तत्वों के पाँच मंत्रबीज निर्धारित किये है। प्रत्येक मंत्रबीज संलग्न तत्व से संबंधित होने से उन पर नियंत्रण स्थापित करता है। मंत्र :-

*"क्षि प ॐ स्वाहा"*

क्षि - दोनों जानु (घुटनों) पर - पीले वर्ण की कल्पना सहित स्थापित करना।

प - नाभि पर - श्वेत वर्ण की कल्पना सहित स्थापित करना।

ॐ - हृदय पर - लाल रंग की कल्पना सहित स्थापित करना।

स्वा - मुँह पर - आसमानी रंग की कल्पना सहित स्थापित करना।

हा - मस्तष्क पर - श्याम वर्ण की कल्पना सहित स्थापित करना।

(दोनो हाथों के पंजों से आरोह-अवरोह क्रम से संबंधितबीजाक्षरों को संबंधित अंग पर स्थापित करना- ३ बार)

**(इ) अंग न्यास :**

(देह तंत्र को चैतन्य एवं पवित्र बनाने की क्रिया)



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शरीर के जिन अंगो को पूजन विधि के अंतर्गत मुख्य रूप से उपयोग में लेना है उन्हें मंत्र स्थापना द्वारा चैतन्य जागृत करने हेतु अंग न्यास क्रिया की जाती है। मंत्र -

*"ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रौं ह्रः"*

ह्राँ - हृदय पर तत्व मुद्रा द्वारा

ह्रीँ - कंठ पर तत्व मुद्रा द्वारा

ह्रूँ - तालू (मुख के अन्दर उपर का भाग) पर तत्व मुद्रा द्वारा

ह्रों - भ्रूमध्य (दोनो भौंवों के बीच नासिकाग्र भाग) पर तत्व मुद्रा द्वारा

ह्रः - ब्रह्मम रंध्र (सिर की चोटी के भाग) पर तत्व मुद्रा द्वारा (अंगूठे के अगले भाग पर अनामिका रखने से तत्वमुद्रा बनती है)

**(ई) कर-न्यास :**

(पूजा अन्तर्गत दोनों हाथों का उपयोग होता है अतः दोनों हाथों की अंगुलिओं एवं हथेलियों को शुद्ध पवित्र एवं चैतन्य बनाने हेतु की जाने वाली क्रिया)

१ ॐ ह्राँ णमो अरिहंताणं - अंगुष्ठाभ्यां नमः - हाथ की प्रथम अंगुली से अंगूठे के मूल से उपर तक स्पर्श करते हुए श्वेत वर्णीय अरिहंत भगवंत की स्थापना करना।



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२ ॐ ह्रीँ णमो सिद्धाणं - तर्जनीभ्यां नमः - हाथ के अंगूठे से प्रथम अंगुली के मूल से उपर तक स्पर्श करते हुए रक्तवर्णिय सिद्ध भगवंतो की स्थापना करना।

३ ॐ हू॒ँ णमो आयरियाणं - मध्यमाभ्यां नमः - हाथ के अंगूठे से मध्यमा अंगुली के मूल से उपर तक स्पर्श करते हुए पीतवर्णीय आचार्य भगवंतो की स्थापना।

४ ॐ ह्रीँ णमो उवज्झायाणं - अनामिकाभ्यां नमः - हाथ के अंगूठे से अनामिका अंगुली के मूल से उपर तक स्पर्श करते हुए नीलवर्णीय उपाध्याय भगवंत की स्थापना।

५ ॐ ह्रूँः णमो लाए सव्वसाहणं - कनिष्ठिकाभ्यं नमः - हाथ के अंगूठे से कनिष्ठा अंगूली के मूल से उपर तक स्पर्श करते हुए श्यामवर्णीय साधु भगवतो की स्थापना।

६ ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रौं ह्रः सम्यग्ज्ञान - दर्शन-चारित्र तपोभ्यः करतल- करपृष्ठाभ्यां नमः दोनो हाथों के तलियों का एक दूसरे से स्पर्श

## (३) हृदय शुद्धिः

*ॐ विमलाय विमलचित्ताय ज्वीँ क्ष्वीँ स्वाहा*

बायाँ हाथ हृदय पर रखकर पापविचारों को दूर करके हृदय



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शुद्धि की क्रिया करना-इससे अशुभ विचारों का शमन होकर चित्त की एकाग्रता बढ़ती है।

**(ऊ) मंत्र स्नान -**

ॐ अमले विमले सर्वतीर्थजले पः पः पां पां वां वां अशुचिः शुचिर्भवामि स्वाहा।

दोनों हाथों से मंत्र स्नान की चेष्टा करना।

**(ए) कल्मष दहन -**

*ॐ विद्युत स्फुलिंगे महाविद्ये सर्वकल्मषं दह दह स्वाहा।*

दोनों हाथों से भुजाओं को स्पर्श करते हुए स्वस्तिक मुद्रा करना। मन में ऐसा चिंतवन करना कि कलुषित विचारों का शमन हो रहा है।

**(ऐ) वज्रपंजर - आत्मरक्षा स्तोत्र :**

*ॐ परमेष्ठि नमस्कारं, सारं नवपदात्मकम्*
*आत्मरक्षाकरं वज्र-पंजराय स्मराम्यहम्*
*ॐ णमो अरिहंताणं, शिरस्क शिरसि स्थितम्*

(मस्तक पर मजबूत टोपू पहना हुआ है
ऐसी कल्पना हाथों से करना)



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

***ॐ णमो सव्वसिद्धाणं, मुख मुख पटाबरम्***

(कल्पना करना कि मुख को मजबूत वस्त्र से आच्छादित कर रखा है)

***ॐ णमो आयरियाणं, अंगरक्षातिशायिनी***

(वक्ष पर बख्तर-कवच धारण करने की कल्पना करना)

***ॐ णमो उवज्झायाणं, आयुधं हस्तायोर्हढ***

(हाथ में शस्त्र लेकर दुष्ट शक्तियों को भगाने की कल्पना करना)

***ॐ णमो लाए सव्वसाहूणं, मोचके पादयोः शुभे***

(पैरो में मजबूत कवच धारण करने की कल्पना करना)

***ऐसो पंच णमोकारो, शिलावज्रमयी तले***

(वज्र की मजबूत शिला पर बैठने की कल्पना दोनों हाथ फैला कर करना)

***सव्वपावपणासणो, वप्रो वज्रमयो बहिः***

(हाथ के पंजो से वज्रमय मजबूत किले की कल्पना करना)

***मंगलाणं च सव्वेसिं, खादिरांगार-खातिका***

(तर्जनी अंगुली को गोलाकार घुमाकर किले के चारों ओर



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अग्नि भरी खाई की कल्पना करना)

स्वाहान्तं च पद ज्ञेयं, पढमं हवइ मंगलं, वप्रोपरि वज्रमयं, पिधान देह-रक्षणे।

महा प्रभावा रक्षेयं, क्षुद्रोपद्रव नाशिनी, परमेष्ठि पदोदभूता, कथिता पूर्वसूरिभिः॥

यश्चैनं कुरुते रक्षां, परमेष्ठि पदैः सदा, तस्य न स्याद् भयं व्याधि-राधिश्चापि कदाचन॥

विध्ननाशनार्थे छोटिकान्यासः

(पूजन विधि के दौरान विभिन्न दिशाओं में आकाश में गुजरती हुई शक्तियों तथा वातावरण में किसी प्रकार का विध्न उपस्थित न हो-इसके लिये छोटिका क्रिया)

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | अ | आ | - पूर्व दिशा में |
| २ | इ | ई | - दक्षिण दिशा में |
| ३ | उ | ऊ | - पश्चिम दिशा में |
| ४ | ए | ऐ | - उत्तर दिशा में |
| ५ | ओ | औ | - उर्ध्व दिशा में |



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६ अं अः - अधो दिशा में

दाहिने अंगूठे तथ तर्जनी अंगुली के अग्र भाग के बीच में केसर-कुंकुमयुक्त गुलाब के पुष्प को पकड़ कर मत्रोच्चारण के साथ संबंधित दिशा में उछालना।

क्षेत्रपाल पूजनः ''ॐ क्षाँ क्षीँ क्षूँ क्षौँ क्षः अत्रस्थक्षेत्रपालाय स्वाहा''

रक्षा पोटली अभिमंत्रित करने का मंत्र

''ॐ हूँ क्षूँ फुट किरिटि किरिटि घातय घातय, परकृतविघ्नान् स्फेटय स्फेटय, सहस्त्रखण्डान कुरू-करू, परमुद्रा छिन्द छिन्द, परमंत्रान् भिन्द भिन्द हू क्षः फट् स्वाहा॥

रक्षापोटली बांधने का मंत्र - ॐ नमोऽर्हते रक्ष हूँ, फुट् स्वाहा॥

पीठस्थापन- ॐ अर्हं ऐं ह्रीं श्री चतुःविशंति तीर्थंकरा अत्र सहस्त्रपत्र कनक कमल पीठे तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्वाहा। (वासक्षेप पूजन)

बिम्ब स्थापन - यंत्रस्थापन

ॐ अर्हं ऐं ह्रीं चतुःवीशंति तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा। (वासक्षेप



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पूजन)

वायुकुमार आव्हान- ॐ ह्रीं वातकुमाराय विध्नविनाशनाय महीं पूतां कुरु कुरु स्वाहाः।

मेघकुमार आव्हान- ॐ ह्रीं मेघकुमाराय धरां प्रक्षालय प्रक्षालय हूँ फुट् स्वाहा।

गुरू-स्मरण- गुरूपादुका पूजन

येन ज्ञानप्रदीपेन, निरस्याभ्यंतरं तमः, ममात्मा निर्मली चक्रे, तस्मै श्री गुरूवे नमः॥
ॐ ऐं क्लौं ह्रीं श्रीँ हूँः स्फ्रेँ सहस्त्रकमल वरयूँ हसौं स्हौं गुरु पादुकाभ्यौ नमः। गुरुपादुकां पूजयामि नमः॥

## मुद्रापंचक द्वारा आव्हानः

आव्हान मुद्रा : ॐ आँ क्रौं ह्रीं चतुःवीशंति तीर्थकराःअत्र आगच्छ आगच्छ स्वाहा संवोषट्।

स्थापन मुद्रा : ॐ आँ क्रौं ह्रीं श्री चतुःवीशंति तीर्थकराःअत्र तिष्ठः तिष्ठ ठः ठः

संन्निधान मुद्रा : ॐ आँ क्रौं ह्रीं श्री चतुःवीशंति तीर्थकराः मम संन्निहिता भव भव वषट्।



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संन्निरोध मुद्राः ॐ आँ क्रौं ह्रीं श्री चतु:वींशंति तीर्थंकराः पूजांतं यावत् अत्रैव स्थातव्यम्

अवगुंठन मुद्राः ॐ आँ क्रौं ह्रीं श्री चतु:वींशंति तीर्थंकराः परेषामदृश्यो भव भव स्वाहा॥

अमृतीकरणः ॐ आँ क्रौं ह्रीं श्री चतु:वींशंति तीर्थंकराः साक्षात् संजीविता अमृतीभूता भवंतु स्वाहा। (सुरभि मुद्रा)

संकल्प विधिः ॐ अस्मिन जंबूद्वीपे भरतक्षेत्रे दक्षिणार्धभरते मध्य खण्डे अमेरिका देशे न्यूयोर्क नगरे संवत २०६४ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल ११ तिथौ रवि वासरे मम शरीरे रोगादि निवारणार्थं, मनः कामना सिद्धयर्थ बोधिबीज प्राप्तयर्थं, लाभार्थ, क्षेमार्थ जयार्थ, विजयार्थ श्री चतुः विशंति तीर्थंकराः जाप, पूजा, आराधना करिष्ये स च अधिष्ठायक देव प्रसन्नार्थ सफली भवतु।

❖ ❖ ❖



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

# १. श्री ऋषभदेव तीर्थंकर

**आदिमं पृथिवी नाथ, मादिमं निष्परिग्रहं ।**
**आदिमं तीर्थनाथं च, ऋषभस्वामिनं स्तुम : ।**

**આદિમં પૃથિવી નાથ, માદિમં નિષ્પરિગ્રહં ।**
**આદિમં તીર્થનાથં ચ, ઋષભસ્વામિનં સ્તુમઃ ।**

ॐ णमो जिणाणं च, णमो ओहि जिणाणं च, णमो परमोहि जिणाणं णमो सव्वेहि जिणाणं! ॐ णमो अणतोहि जिणाणं। ॐ वृषभस्स भगवदो, वृषभ स्वामी धत्त वियराणी अरिहंताणं विज्झाणं महाविज्झाणं अणमिप्पदेयिक्कम्मियाणि जम्भिर्कशविस के अनाहत विद्यायै स्वाहा॥

# २. श्री अजितनाथ तीर्थंकर

**अर्हन्तमजितं विश्व, कमलाकर भास्करम् ।**
**अम्लान - कैवलादर्श, संक्रान्तं जगतं स्तुवे ।।**

**અર્હન્તમજિતં વિશ્વ, કમલાકર ભાસ્કરમ્; ।**
**અમ્લાન કૈવલાદર્શ, સંક્રાન્તં જગતં સ્તુવે ।।**

ॐ णमो भगवदो अजितस्स सिज्झ धम्मे भगवदो विज्झाणां। ॐ णमो परमोहि जिणाणं, ॐ णमो सव्वोहि जिणाणं भगवदो अरहंतो अजितस्स सिज्झधम्मे भगवदो विज्झर अजित अपराजिते पाणिपादे महाबले अनाहत विद्यायै स्वाहा॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

# ૩. શ્રી સંભવનાથ તીર્થંકર

विश्वभव्यजनाराम - कुल्यातुल्या जयन्ति ताः ।
देशनासमये वाचः श्री सम्भवजगत्पतेः ।।

વિશ્વભવ્યજનારામ - કુલ્યાતુલ્યા જયન્તિ તાઃ ।
દેશનાસમયે વાચઃ, શ્રી સમ્ભવજગત્પતેઃ ।।

ॐ णमो भगवदो अरहदो शंभवस्स
अनाहत विज्जंई सिज्झि धम्मे
भगवदो महाविज्झा शंभवे शंभ वाणं
स्वाहा॥

# ૪. શ્રી અભિનંદનસ્વામી તીર્થંકર

अनेकांतमतांभोधि समुल्लासनचन्द्रमाः ।
दद्यादमन्दमानन्दं, भगवानभिनंदनः ।।

અનેકાંતમતાંભોધિ, સમુલ્લાસનચન્દ્રમાઃ ।
દદ્યાદમન્દમાનન્દં, ભગવાનભિનંદનઃ ।।

ॐ णमो भगवदो अरहदो
अभिणंदणस्स सिज्झ भगवदो विज्झर
महाविज्झर अभिणन्दणे वाहा॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

# ૫. શ્રી સુમતિનાથ તીર્થંકર

**द्युसत्किरीटशाणाग्रो, त्तेजितांघ्रिनखावलिः ।**
**भगवान् सुमतिस्वामी, तनोत्वभिमतानि वः ।।**

**દ્યુસત્કિરીટશાણાગ્રો, ત્તેજિતાંધ્રિનખાવલિઃ ।**
**ભગવાન સુમતિસ્વામી, તનોત્વભિમતાનિ વઃ ।।**

ॐ णमो भगवदो अरहंतो सुमतिस्स
सिज्झि-धम्मे भगवदो विज्झर सुमति
सामिणंवानेंगे स्वाहा॥

# ૬. શ્રી પદ્મપ્રભસ્વામી તીર્થંકર

**पद्मप्रभप्रभोर्देह, भासः पुष्णन्तु वः श्रियम् ।**
**अन्तरङ्गारिमथने, कोपाटोपादिवारुणाः ।।**

**પદ્મપ્રભપ્રભોર્દેહ, ભાસઃ પુષ્ણાન્તુ વઃ શ્રિયમ્ ।**
**અન્તરઙ્ગારિમથને, કોપાટોપાદિવારૂણાઃ ।।**

ॐ णमो भगवदो अरहदो पोमे अरहतस्स
सिज्झ भगवदो विज्झर महाविज्झर पोमे
महापोमे महापोमेश्वरी स्वाहा॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

# ૭. શ્રી સુપાર્શ્વનાથ તીર્થંકર

श्री सुपार्श्वजिनेन्द्राय, महेन्द्रमहिताङ्घ्रये ।
नमश्चतुर्वर्णसङ्घ, गगनाभोगभास्वते ।।

શ્રી સુપાર્શ્વજિનેન્દ્રાય, મહેન્દ્રમહિતાઙ્‌ઘ્રયે ।
નમશ્ચતુર્વર્ણસઙ્ઘ, ગગનાભોગભાસ્વતે ।।

ॐ णमो भगवदो अरहदो सुपारिसस्स सिज्झ
- धम्मे भगवदो विज्झर हंसे सुपारि
सुमतिपासे स्वाहा॥

# ૮. શ્રી ચન્દ્રપ્રભસ્વામી તીર્થંકર

चन्द्रप्रभप्रभोश्चन्द्र, मरीचिनिचयोज्जवला ।
मूर्तिर्मूर्तसितध्यान, निर्मितेव श्रियेऽस्तु वः ।।

ચન્દ્રપ્રભપ્રભોશ્ચદ્ર, મરીચિનિચયોજ્જવલા ।
મૂર્તિર્મૂર્તસિતધ્યાન, નિર્મિતેવ શ્રિયેઽસ્તુ વઃ ।।

ॐ णमो भगवदो अरहदो चन्द्रप्पहस्स सिज्झ - ध
म्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर चंदे चंदप्पहस्सपूर्व
स्वाहा॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

## ૯. શ્રી સુવિધિનાથ તીર્થંકર

**करामलकवद्विश्वं, कलयन केवलश्रिया ।**
**अचिन्त्यमाहात्म्यनिधिः, सुविधिर्बोधयेस्तु वः ।।**

**કરામલકવદ્વિશ્વં, કલયન કેવલશ્રિયા ।**
**અચિન્ત્યમાહાત્મ્યનિધિઃ સુવિધિર્બોધયેસ્તુ વઃ ।।**

ॐ णमो भगवदो अरहदो पुष्पदंतसस्स सिज्झ -
धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर पुप्फे पुप्फेसरि
सुरि स्वाहा॥

## ૧૦. શ્રી શીતલનાથ તીર્થંકર

**सत्वानां परमानन्द, कन्दोद्भेदनवाम्बुदः ।**
**स्याद्वादामृतनिस्यन्दी, शीतलः पातु वो जिनः ।।**

**સત્વાનાં પરમાનન્દ, કન્દોદ્‌ભેદનવામ્બુદઃ ।**
**સ્યાદ્વાદામૃનિસ્યન્દી, શીતલઃ પાતુ વો જિનઃ ।।**

ॐ णमो भगवदो अरहदो शीतलस्स अनाहत
विज्झा विज्झारइ सिज्झ-धम्मे भगवदो महाविज्झर
महाविज्झ शीयलस्स सिवो सस्सि अणुमहि
अमुमाणमो भगवदो नमो नम स्वाहा॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

# ૧૧. શ્રી શ્રેયાંસનાથ તીર્થંકર

भवरोगार्त्तजंतूना मगदंकारदर्शनः ।
निःश्रेयसश्रीरमणः श्रेयांसः श्रेयसेऽस्तु वः ।।

ભવરોગાર્ત્તજંતૂના, મગદંકારદર્શનઃ ।
નિઃશ્રેયસશ્રીરમણઃ શ્રેયાંસઃ શ્રેયસેડસ્તુ વઃ ।।

ॐ णमो भगवदो अरहदो अरहदो श्रेयांश सिज्झि-
धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर श्रेयांस करै भयंकरै
स्वाहा॥

# ૧૨. શ્રી વાસુપૂજ્યસ્વામી તીર્થંકર

विश्वोपकारकीभूत, तीर्थकुत्कर्मनिर्मितिः ।
सुरासुरनरैः पूज्यो, वासुपूज्यः पुनातु वः ।।

વિશ્વોપકારકીભૂત, તીર્થકુત્કર્મનિર્મિતિઃ ।
સુરાસુરનરૈઃ પૂજ્યો, વાસુપૂજ્યઃ પુનાતુ વઃ ।।

ॐ णमो भगवदो अरहदो वासुपूज्य सिज्झ धम्मै
भगवदो विज्झर महाविज्झर पुज्जे महापुज्जे
पुज्जायै स्वाहा॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

# १ ૩. શ્રી વિમલનાથ તીર્થંકર

**विमलस्वामिनो वाचः; कतकक्षोदसोदराः ।**
**जयन्ति त्रिजगच्चेतो, जलनैर्मल्यहेतवः ।।**

વિમલસ્વામિનો વાચઃ; કતકક્ષોદસોદરાઃ ।
જયન્તિ ત્રિજગચ્ચેતો, જલનૈર્મલ્યહેતવઃ ।।

ॐ णमो भगवदो अरहदो विमलस्स सिज्झ-धम्मे
भगवदो विज्झर महाविज्झर अमले कमले निम्मले
स्वाहा॥

# ૧૪. શ્રી અનન્તનાથ તીર્થંકર

**स्वयंभूरमणस्पर्द्धि, करुणारसवारिणा ।**
**अनन्तजिदनन्तां वः, प्रयच्छतु सुखश्रियम् ।।**

સ્વયંભૂરમણસ્પર્દ્ધિ, કરુણારસવારિણા ।
અનન્તજિદનન્તાં વઃ પ્રયચ્છતુ સુખશ્રિયમ્ ।।

ॐ णमो भगवदो अरहदो अणंत सिज्झ धम्मे
भगवदो विज्झर महाविज्झर अणंते अणंतवाणे
अणंतकेवलणाणे अणंतकेवलदंसणे अणु
पुज्जवासणे अणंतागम कैवलियै स्वाहा॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

## १५. श्री धर्मनाथ तीर्थंकर

**कल्पद्रुमसधर्म्माण, मिष्टप्राप्तौ शरीरिणाम् ।**
**चतुर्घ्धा धर्म देष्टारं, धर्मनाथमुपास्महे ।।**

**કલ્પદ્રુમસધર્મ્માણ, મિષ્ટપ્રાપ્તો શરીરિણામ્ ।**
**ચતુર્ધ્ધં ધર્મ દેષ્ટારં, ધર્મનાથમુપાસ્મહે ।।**

ॐ णमो भगवदो अरहदो धम्मस्स सिज्झ-धम्मे
भगवदो विज्झर महाविज्झर धम्मे रुध्रर्मेण धम्माइं
वा सुहते भंते धम्मे अंगमे मंमेवु अपदि दम्मे स्वाहा।

## १६. श्री शान्तिनाथ तीर्थंकर

**सुधासोदरवाग्ज्योत्स्ना, निर्मलीकृतदिङ्मुखः ।**
**मृगलक्ष्मा तमःशांत्यै, शान्तिनाथजिनोऽस्तु वः ।।**

**સુધાસોદરવાગ્જ્યોત્સ્ના, નિર્મલીકૃતદિઙ્મુખઃ ।**
**મૃગલક્ષ્મા તમઃશાંત્યે, શાન્તિનાથજિનોડસ્તુ વઃ ।।**

ॐ णमो भगवदो अरहदो शान्तिस्स सिज्झ धम्मे
भगवदो विज्झर महाविज्झर शान्तिकुम्पमे स्वाहा॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

# १७. श्री कुन्थुनाथ तीर्थंकर

**श्री कुन्थुनाथो भगवान् सनाथोऽतिशयर्द्धिभिः ।**
**सुरासुरनृनाथाना, मेकनाथोऽस्तु वः श्रिये ।।**

श्री कुन्थुनाथो भगवान् सनाथोऽतिशयर्द्धिभिः ।
सुरासुरनृनाथाना, मेकनाथोऽस्तु वः श्रिये ।।

ॐ णमो भगवदो अरहदो कुन्थुस्स सिज्झ धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर कुन्थु कुन्थु कै कुन्थुशे स्वाहा॥

# १८. श्री अरनाथ तीर्थंकर

**अरनाथस्तु भगवां, श्चतुर्थारनभोरविः ।**
**चतुर्थ पुरुषार्थश्री, विलासं वितनोतु वः ।।**

अरनाथस्तु भगवां, श्चतुर्थारनभोरविः ।
चतुर्थ पुरुषार्थश्री, विलासं वितनोतु वः ।।

ॐ णमो भगवदो अरहदो अरहस्स सिज्झ धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर अरणे अप जिग्रहति स्वाहा॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

# ૧૯. શ્રી મલ્લિનાથ તીર્થંકર

सुरासुरनराधीश, मयूरनववारिदम् ।
कर्मद्रून्मूलने हस्ति, मल्लं मल्लिमभिष्टुमः ।।

સુરાસુરનરાધીશ, મયૂરનવવારિદમ્ ।
કર્મદ્રૂન્મૂલને હસ્તિ, મલ્લં મલ્લિમભિષ્ટુમઃ ।।

ॐ णमो भगवदो अरहदो मलिस्स सिज्झ धम्मे
भगवदो विज्झर महाविज्झर मल्लि मल्लि
अरिपायस्स मल्लि स्वाहा॥

# ૨૦. શ્રી મુનિસુવ્રતસ્વામી તીર્થંકર

जगन्महामोहनिद्रा, प्रत्यूषसमयोपमम् ।
मुनिसुव्रतनाथस्य, देशनावचनं स्तुमः ।।

જગન્મહામોહનિદ્રા, પ્રત્યૂષસમયોપમમ્ ।
મુનિસુવ્રતનાથસ્ય, દેશનાવચનં સ્તુમઃ ।।

ॐ णमो भगवदो अरहदो अरहदो मुनिसुवयस्स
सिज्झ-धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर
सुब्बिदेतद्रवद्रे स्वाहा॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

# २१. श्री નમિનાથ તીર્થંકર

**लुठन्तो नमतां मूर्ध्नि, निर्मलीकारकारणम् ।**
**वारिप्लवा इव नमेः, पान्तु पादनखांशवः ।।**

લુઠન્તો નમતાં મૂર્ધ્નિ, નિર્મલીકારકારણમ્ ।
વારિપ્લવા ઈવ નમેઃ, પાન્તુ પાદનખાંશવઃ ।।

ॐ णमो भगवदो अरहदो णमिसस सिज्झ-धम्मे
भगवदो विज्झर महाविज्झर णति णमि स्वाहा॥

# २२. श्री નેમિનાથ તીર્થંકર

**यदुवंशसमुद्रेन्दुः, कर्मकक्षहुताशनः ।**
**अरिष्टनेमिर्भगवान्, भूयादोऽरिष्टनाशनः ।।**

યદુવંશસમુદ્રેન્દુઃ, કર્મકક્ષહુતાશનઃ ।
અરિષ્ટનેમિર્ભગવાન, ભૂયાદોડરિષ્ટનાશનઃ ।।

ॐ णमो भगवदो अरहदो अरिट्ठणेमिस्स
सिज्झ-धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर सम्मति
महारति अरति ददिरसति महति स्वाहा॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

# ૨૩. શ્રી પાર્શ્વનાથ તીર્થંકર

**कमठे धरणेन्द्रे च, स्वोचित्तं कर्म कुर्वति ।**
**प्रभुस्तुल्यमनोवृत्तिः, पार्श्वनाथः श्रियेऽस्तु वः ।।**

કમઠે ધરણેન્દ્રે ચ, સ્વોચિતં કર્મ કુર્વતિ ।
પ્રભુસ્તુલ્યમનોવૃત્તિઃ, પાર્શ્વનાથઃ શ્રિયેડસ્તુ વઃ ।।

ॐ णमो भगवदो अरहदो उरगकुल जासु
पासु सिज्झ-धम्मे भगवदो विज्झर वग्गै
महावग्गे से पासै संमास सनिगितोदि
स्वाहा॥

# ૨૪. શ્રી મહાવીરસ્વામી તીર્થંકર

**श्रीमते वीरनाथाय, सनाथायाद्भुतश्रिया**
**महानन्दसरोराज, मरालायार्हते नमः ।।**

**શ્રીમતે વીરનાથાય, સનાથાયાદ્‌ભુતશ્રિયા**
**મહાનન્દસરોરાજ, મરાલાયાર્હતે નમઃ ।।**

ॐ णमो भगवदो अरहदो महति महावीर
वढ्ढमाण बुद्धस्स अणाहत विज्झाइ सिज्झ-ध
म्मै भगवदो महाविज्झ महाविज्झ वीर महावीर
सिरिसणमदिवीर जयतां अपराजिते स्वाहा॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ऐँ नमः ॥

## ॥श्री सरस्वती देवी महापूजन विधि॥

आव्हान- ॐ ह्रीँ श्रीँ जिनशासन - श्री द्वादशांग्यधिष्ठात्रि। श्री सरस्वती देवि। अत्र अवतर अवतर संवौषट् नमः श्री सरस्वत्यै स्वाहा॥

स्थापनम- ॐ ह्रीँ श्रीँ जिनशासन - श्री द्वादशांग्यधिष्ठात्रि। श्री सरस्वती देवि। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः नमः श्री सरस्वत्यै स्वाहा॥

संन्निधापन-ॐ ह्रीँ श्रीँ जिनशासन - श्री द्वादशांग्यधिष्ठात्रि। श्री सरस्वती देवि। मम संन्निहिता भव भव वष्ट नमः श्री सरस्वयै स्वाहा॥

सन्निरोधनम् - ॐ ह्रीँ श्रीँ जिनशासन - श्री द्वादशांग्यधिष्ठात्रि। श्री सरस्वती देवि। पूजां यावदत्रैव स्थातव्यम् नमः श्री सरस्वत्यै स्वाहा॥

अवगुण्ठनम्- ॐ ह्रीँ श्रीँ जिनशासन - श्री द्वादशांग्यधिष्ठात्रि। श्री सरस्वती देवि। परेषामदृश्या भव भव फट् नमः श्री सरस्वत्यै स्वाहा॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पूजनम्- ॐ ह्रीँ श्रीँ जिनशासन - श्री द्वादशांग्यधिष्ठात्रि। श्री सरस्वती देवि। इमां पूजां प्रतीच्छ प्रतीच्छ नमः श्री सरस्वत्यै स्वाहा॥

## श्री सरस्वती स्तव (श्री चिरंतनाचार्य रचित):

सकलमंगल वृद्धि विधायिनी, सकल सद्‌गुण संतति दायिनी।
सकल मञ्जुल सौरव्य विकाशिनी, हरतु मे दुरितानि सरस्वती॥
अमरदानव मानव सेविता, जगति जाड्यहरा श्रुत देवता।
विशद पक्ष विहंग विहारिणी, हरतु मे दरितानि सरस्वती॥
प्रवर पंडित पुरूष पूजिता, प्रवरकांति विभूषण राजिता।
प्रवरदेह विभाभर मंडिता, हरतु मे दुरितानि सरस्वती॥
सकल शीतमरीचिसमानना, विहित सेवक बुद्धि विकाशना।
घृतकमण्डल पुस्तक मालिका, हरतु मे दुरितानि सरस्वती॥
सकलमान संशय हारिणी, भवभवोर्जित पाप निवार्रिर्णी।
सकलसदगुण संतति धारिणी, हरतु में दुरितानि सरस्वती॥
प्रबल वैरिसमूह विमर्दिनी, नृपसभादिषु मान विवद्धिनी।
नतजनोदित संकट भेदिनी, हरतु मे दुरितानि सरस्वती॥
सकलसद्‌गुणभूषित विग्रहा, निजतनुद्युतितर्जित विग्रहा।
विशदपवस्त्रधरा विशदर्ति, हरतु मे दुरितानि सरस्वती॥
भवदवानल शांति तनूनपा, द्वितकैरकृति मंत्र कृतकृपा।
भविकचित्त विशुद्धि विधायिनी, हरतु मे दुरितानि सरस्वती॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तनुभृतां जडतामपहृत्य या, विबुधतां ददते मुदिताऽचैया।
मतिमतां जननीति मत्ताऽत्र सा, हरतु मे दुरितानि सरस्वती॥
सकलशास्त्रपयोनिधिनौः परा, विशदकीर्ति धराऽगितं मोहरा।
जिनवरानन पद्मनिवासिनी, हरतु मे दुरितानि सरस्वती॥
इत्थं श्री श्रुतदेवता भगवती विद्वज्जनानां प्रसूः।
सम्यग्ज्ञान वर प्रदा धनतमोनिर्नाशिनी देहिनाम्॥
श्रेंयः श्री वरदायिनी सुविधिना संपूजिता संस्तुता।
दुष्कर्माण्यपहृदय में विद्धतां सम्यक श्रुतं सर्वदा॥

## पूजनः नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योंपाध्याय सर्व साधुभ्यः

१ ऐं ह्री श्रीं मन्त्ररूपे विबुध जननुते! देवदेवेन्द्र वन्द्ये!
चं चं चं चंद्रावदाते। क्षपितकलिमले। हारनी
हारगौरे। भीमे। भीमाट्टहासे। भवभय हरणे।
भैरवे। भीमरूपे। ह्राँ ह्रीँ हूँ कार नादे। मम मनसि
सदा, शारदे देवि तिष्ठ।।

ॐ ह्रीं घिषणायै, घीर्ये, मत्यै, मेघायै, वाचे, विभावायै,
सरस्वत्यै, गिरे वाण्यै, भारत्यै, भाषायै ब्राह्मण्यै,
श्री सरस्वत्यै गंधं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं,
नैवेद्यं, फालादि यजमहे स्वाहा॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(२) हा पक्षी बीजगर्भे! सुखररमणी बंदितेऽनेक रूपे। कोपं वं झं विधेयं धरितधरिवरे। योगिनां योगगम्ये। हँ हँ सः स्वर्ग राजेः प्रतिदिन नमिते। प्रस्तुता लापपाये दैत्येन्द्रैर्ध्यायमाने। मम मनसि सदा शारदे। देवि। तिष्ठ।।

ॐ ह्रीं मागधिप्रियायै, सर्वेश्वयै, महागोर्यै, शांकर्यै, भक्तवत्सलायै, रौद्रयै चाण्डुलिन्यै, चण्डयै, भैरव्यै, जयायै, गायत्रयै। श्री सरस्वतयै स्वाहा।।

(३) दैत्यैर्दत्यारिनाथै नमित पदयुगे। भक्तिपूर्व त्रिसन्ध्यं, यक्षै सिद्धैश्च नमैः रहमहमिकया देहकांत्याऽतिकान्तैः। षाँ ईँ ॐ प्रस्फुटाभाक्षरवर मृदुना, सुस्वरेणासुरेणाऽव्यन्तं प्रोग्दीयमाने। मम मनसि सदा शारदे। देवि। तिष्ठ।।

ॐ ह्रीं चतुर्बाहवे, कोमार्यै, परमेश्वर्यै, देवमात्रे, अक्षयायै, नित्यायै, त्रिपुरभेरवै, त्रैलोक्यस्वामिन्यै, देव्यै, मांकायै, कारूण्य सूत्रिण्यै, शूलिन्यै। श्री सरस्वत्यै स्वाहा।।

(४) क्षीँ क्षीँ क्षूँ ध्येयरूपे। हन विषम विषं, स्थावरं



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जंगमं च संसारे संसृतानां तव चरणयुगं सर्वकालं नरायणाम्। अव्यक्तेव्यक्तरूपे। प्रणतनखरे। ब्रह्मरूपे। स्वरूपे। ऐँ क्लीँ क्रूँ योगिगम्ये। मम मनसि सदा शारदे। देवि। तिष्ठ।।

ॐ ह्रीं पद्मिन्यै, लक्ष्म्यै, पंकजवासिन्यै, चामुण्डायै, खेचर्ये, शांतायै, हुंकारायै, चंद्रशेखर्य, वाराहयै, विजयायै, अंतर्द्धायै कम्यै। श्री सरस्वत्यै। स्वाहा।।

(५) सम्पूर्णात्यन्तशोभैः शशधरधवले रासलावण्यभूतै-रम्यैर्व्यक्तैश्च कांतैर्निजकरनिकरै श्चंन्द्रिकाकारभासैः। अस्माकीनं नितान्तोदित मनुदिवसं कल्भषं क्षालयंति, श्रीं श्रीं श्रूँ मंत्ररूपे। मम मनसि सदा शारदे। देवि। तिष्ठ।।

ॐ ह्रीं हत्र्यै, सुरेश्वर्यै चंद्राननायै, जगधात्र्यै, वीणाम्बुजकर द्वयायै, सुभगायै, सर्वगायै, स्वाहा, जम्भीन्यै, स्तंभिन्यै, ईश्वरायै, काल्यै। श्री सरस्वत्यै। स्वाहा।।

(६) भास्वत्पद्मासनस्थे। जिनमुखनिरते। पद्महस्ते। प्रशस्ते। ज्राँ ज्रीं ज्रँ ज्रः पवित्रे। हर हर दुरितं दुष्टसंजुष्ट चेष्टम्। वाचालाभिः स्वशक्त्या



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्रिदशयुवतिभिः प्रत्यहं पूज्यपादे।
चंचश्वंद्राकराले। मम मनसि सदा शारदे। देवि।
तिष्ठ।।

ॐ ह्रीं कापालिन्यै, कौल्यै, विज्ञायै, रात्र्यै, त्रिलोचनायै,
पुस्तक व्यग्रहस्तायै, योगिन्यै, अमित-विक्रमायै,
सर्वसिद्धिकयै, संध्यायै, खंगिन्यै, कामरुपिण्यै।
श्री सरस्वत्यै। स्वाहा।

(७) नम्रीभूत क्षितीश प्रवरमणि मुकुटोद्घृष्ट
पादारविन्दे। पद्मास्थे। पद्मनेत्रे। गजपति
गमने। हंसयाने। प्रमाणे। कीर्ति श्री वृद्धिचक्र।
जय विजयजये। गौरिगांधारियुक्ते। ध्येयाध्येय
स्वरूपे।मम मनसि सदा शारदे। देवि। तुष्ठ।।

ॐ ह्रीं सर्वसत्वहितायै, प्रज्ञायै, शिवायै, शुक्लायै,
मनोरमायै, मांगल्यरूचिकारायै, धन्यायै,
काननवासिन्यै, अज्ञाननाशिन्यै, जैन्यै
अज्ञाननिशिभास्कर्यै, अज्ञान जनमार्त्रे। श्री
सरस्वत्यै। स्वाहा।

(८) विद्युज्जवाला शुशुभ्रां प्रवरमणिमयी मक्षमालां
संरूपां हस्ताब्जे धारयंति दिनमनु पठतामष्टकं



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शारद च। नागेन्द्रैरिन्द्र चंद्रैर्मनुज मुनिगणै:
संस्तुता या च देवी सा कल्याणानि देवी मम
मनसि सद शारदे। देवि। तिष्ठ॥

ॐ ह्रीं अज्ञानोदधिशोषिण्यै, ज्ञानदायै, नर्मदायै, गंगायै,
सीतायै, वागीश्वर्यै, धृत्यै, ऐँकारमस्तकायै, प्रीत्यै,
ह्रींकारवदनायै, ह्रूँत्यै, क्लींकारहृदयायै ॥ "श्री
सरस्वत्यै-स्वाहा"

(९) जनतान्धकार-हरणार्क संनिभेगुणसंतति, प्रथनवाक्
समुच्चये श्रुतदेवतेऽत्र जिनरा पूजने,
कुमतीर्विनाशाय कुरुष्व वांछितम्।

ॐ ह्रीं श्क्त्यै, अष्टबीजायै, निरक्षरायै, निरामयायै,
जगत्स्थायै, नि:प्रपंचायै, चंचलायै चलायै,
निरूत्पन्नायै, समुत्पन्नायै, अनंतायै, गगनोपमायै,
भगवत्यै, वाग्देतायै, वीणापुस्तक मौक्तिकाक्षवलय
श्वेतांजमंडितकरायै, शशधरनिकर,
गौरिहंसवाहनायै॥ "श्री सरस्वत्यै-स्वाहा"

(१०) वस्त्रपूजा- शारदा शारदांभोज, वंदना वंदनाबुजे,
सर्वदा सर्वदास्माकं, सन्निधिं संन्निधिं क्रियात्॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ॐ ह्रीं श्रीं भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक प्रकाशिकायै श्री सरस्वत्यै वस्त्र पूजां यजामहे स्वाहा॥

११ षोडिशभरण पूजा- कांचीसूत्र-विनूतसार निचितैः केयूर-सत्कुण्डलै-मंजीरागद-मुद्रिकादि-मुकुट-प्रालम्बिकावासकैः। अंचच्याटिक पट्टिकादि विलगद् ग्रैवेयकैर्भूषणैः सिंदूरांग सुकांति वर्ष सुभगैः सम्पूजयामो वयम्॥

ॐ ह्रीं श्रीं भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै श्री सरस्वत्यै षोडशाभरणं पूजां यजामहे स्वाहा॥

❖ ❖ ❖



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

## ॥सिद्ध सारस्वताचार्य श्री बप्पभट्टि सूरीश्वर विरचित श्री अनुभूत सिद्ध सारस्वत स्तव॥

### श्री शारदा स्तोत्र

कलमराल विहंगम वाहना, सितदुकूल विभूषण लेपना।
प्रणतभूमिरूहामृतसारिणी, प्रवरदेह विभाभर धारिणी॥
अमृतपर्णकमण्डलु हारिणी, त्रिदश दानव मानव सेविता।
भगवती परमैव सरस्वती, मम पुनातु सदा नयनाम्बुजम॥
जिनपति प्रथिताऽखिल वांगमयी, गणधरानन मंडप नर्तकी।
गुरूमुखाम्बुज खेलन हंसिका, विजयते जगति श्रुत देवता॥
अमृतदीधति बिम्ब समाननां, त्रिजगति जन निर्मित माननाम्।
नवरसामृतवीचि सरस्वती, प्रभुदितः प्रणमामि सरस्वतीम्॥
विततकेतक पत्र विलोचने, विहित संसृति दुष्कृत मोचने।
धवल पक्ष विहंगम लांछिते, जय सरस्वति पूरित वांछिते॥
भवदनुग्रहलेश तरंगिता-स्तदुचितं प्रवदंति विपश्चितः।
नृपसभासु यतः कमलाबला, कुचकलाललनानि वितन्वते॥
गतधना अपि हि त्वदनुग्रहात्, कलित कोमल वाक्य सुधोर्मयः।
चकित बाल कुरंग विलोचना, जनमनासिहरंति तरां नरा॥
कर सरोरूह खेलन चंचला, तव विभाति परा जप मालिका।
श्रुतपयोनिधि मध्य विकस्वरो, ज्ज्वलतरंग कलाग्रह-साग्रहा॥
द्विरद केसरिमारि भुजंगमा-सहनतस्कर राज रूंजा भयम्।



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तव गुणावलि गान तरंगिणां न भविनां भवति श्रुत देवता॥
ॐ ह्रीं क्लीं ब्लीं ततः श्रीं तदनुहस्क्ल ह्रीं अथो ऐं नमोऽन्ते।
लक्षं साक्षाज्जपेद्यः करसम विधिना, सत्तपा, ब्रह्मचारी॥
निर्याती चंद्रबिम्बा-त्कलयंति मनसा त्वां जगच्चन्द्रिकामां:।
सोऽत्यर्थ वहिनकुण्डे विहितघृत हुतिः स्याद् दशाशेन विद्वान॥
रे।रे। लक्षण-काव्यनाटककथा-चम्पूसमालोकने, क्कायांस चित्तनोषि बालिश। मुथा।
किं नम्रवक्त्राम्बुजः। भक्त्याराधय मंत्रराज महसाऽनेनानिशं भारती,
येन त्वं कविताविताान सविता-ऽद्वैत प्रबुधायसे॥
चञ्चचंद्रमुखीं प्रसिद्ध महिमा, स्वाच्छन्द्यराज्य प्रदाः
नायासैन सुरासुरेश्वरगणै- रभ्यर्चिता भक्तितः।
देवी संस्तुत वैभवामलयजा, लेपागरंगद्युतिः सा मां पातु सरस्वती भगवती त्रेलोक्य संजीवनी।
स्तवनमेतदनेक गुणान्वितं, पठति यो भविकः प्रमना प्रगे।
स सहसा मधुरै वचनाऽमृतै-र्नृपगणा, नपीरंजयति स्फुटम्॥
॥ॐ ह्रीं क्लीं ब्लीं श्रीं ह्स्क्ल् ह्रीं ऐं नमः॥

❖ ❖ ❖



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

## ॥श्री बप्पभट्टि सूरीश्वर विरचित श्री सरस्वती कल्प के महाप्रभावशाली मंत्र॥

॥ ॐ ऐँ श्रीँ सौँ क्लीँ वद वद वाग्वादिनी ह्रीँ सरस्वत्यै नमः॥

॥ ॐ ऐँ श्रीँ वद वद वाग्वादिनी। भगवती। सरस्वति ह्रीँ नमः॥

॥ ॐ ऐँ अर्हं वग् वग् वाग्वादिनी भगवती सरस्वति मम जिव्हाग्रे वांस कुरू कुरू स्वाहा॥

॥ ॐ अर्हन्मुख कमल वासिनि पापात्मक्षयंकरि श्रुत ज्ञान ज्वाला सहस्त्र ज्वलिते सरस्वति मत्पापं हन हन दह दह क्षाँ क्षीँ क्षूँ क्षौँ क्षः क्षीखरधवले अमृतसंभवे वँ वँ हूँ हूँ स्वाहा॥

## स्तुति

नमस्ते शारदे। देवि। काश्मीर प्रतिवासिनि। त्वामहं प्रार्थयेऽनाथे। विद्यादानं प्रदेहि मे।

प्रथम भारती नाम, द्वितीयं च सरस्व्ती। तृतीयं शारदा देवी, चतुर्थ हंसगामिनी, पंचमं विदुषां माता, षष्ठं वागीश्वरी तथा। कुमारी सप्तम प्रोक्त-मष्टमं ब्रह्मचारिणी।नवमं त्रिपुरा देवी, दशमं ब्राह्मणी तथा एकादंश च ब्रह्ममाणी, द्वादंश ब्रह्मवादिनी। वाणी त्रयोदंश नाम भाषा चैव सरस्वती। पंचदंश श्रुत देवी, षोडंश गौर्निगद्यते। एतानि शुद्धनामनि, प्रातः रूत्थाय यः पठेत। तस्य संतुष्तये देवी शारदा वरदायिनी या कुंदेन्दु तुषारहार धवला या



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्वेत पद्मासना या वीणा वरदण्ड मंडित करा या शुभ्रवस्त्रावृता।
या बह्माच्युत शंकर प्रभृतिभिर्देवै, सदा वंदिता। सा मां पातु
सरस्वती भगवती निःशेष जाड्यापहा॥

कुंदिदु-गाक्खीर-तुसार-वना। सरोज-हत्था कमल निसन्ना।
वाईसरी पुत्थय वग्ग हत्था, सुहाय-सा अम्ह सया पसत्था॥

आमूलालोल-धूली-बहुल परिमलाऽलीढ-लोलालिमाला।
झंकाराराव-सारामल दल कमलागार-भूमि निवास॥

छाया-संभार-सारे। वरकमल करे। तारहाराभिरामे।
वाणी-संदेह देवे। भव-विरह-वरं देहि में देवि। सारं॥

**श्री श्रुत देवि। सरस्वति। भगवती। हमको वर देना।**
**जीवन की बाँसुरी में देवि, श्रद्धा के स्वर भर देना।**
**सम्यक् ज्ञान का दीप जलाकर, मन का तिमिर हटाना।**
**ना भूले ना भटकें माता ऐसी राह बता देना।**

❖ ❖ ❖



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

## OM HREEM KLEEM BLEEM SHREEM HSKAL HREEM EIM NAMAH

## !! SHREE SARASWATI DEVI MAHAPOOJAN VIDHI !!

**Aahwan**: Om Hreem Shreem Jinshasan - Shri Dwadashang Adhishthatri! Shree Saraswati Devi! Atra Avtar Avtar Sanvosht Namah Shree Saraswatye Swahaa.

**Sthapanam:** Om Hreem Shreem Jinshasan Shrii Dwadashang Adhishthatri! Shree Saraswati Devi! Atra Tishtha-Tishtha Thah Thah Shree Saraswatye Swahaa.

**Samnnidhapan:** Om Hreem Shreem Jinshasan Shri Dwadashang Adhishthatri! Shree Saraswati Devi! Mam Samnnihita Bhava Bhava Vavshat Namah Shree Saraswatye Swahaa.

**Samnnirodhanam:** Om Hreem Shreem Jinshasan Shri Dwadashang Adhishthatri! Shree Saraswati Devi! Poojan Yavadtraiva Sthatavyam Namah Shree Saraswatye Swahaa.



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**Avagunthanam:** Om Hreem Shreem Jishasan Shri Dwadashang Adhishthatri! Shree Saraswati Devi! Pareshamadrishya Bhav Bhav Phat Namah Shree Saraswatye Swahaa.

**Poojanam:** Om Hreem Shreem Jisshasan Shri Dwadashang Adhishthatri! Shree Saraswati Devi! Emam Poojam Prateechha Prateechha Namah, Shree Saraswatye Swahaa.

❖ ❖ ❖

## SHREE SARASWATI STAVA

## (Shree Chirantanacharya Rachit)

Sakal-Mangal Vridhee Vidhayanee,
Sakal Sadguna Santatee Dayinee
Sakal Manjul Soukhya Vikashinee,
Haratu Me Duritani Saraswati
Amar-Danava-Manava Sevita,
Jagati Jadyahara Shrut Dewata
Vishadpaksha Vihanga Viharinee
Haratu Me Duritani Saraswati
Pravar-Pandit Purush Poojita,



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Pravar-Kanti Vibhooshan Rajeeta,
Pravardev Vibhabhar Mandita
Haratu Me Duritani Saraswati.

Sakalsheet-Marichi Samananam,
Vihitsewak Bubhi - Vikashana,
Ghreet - Kamandal- Poostaka Malika,
Haratu Me Duritani Saraswati.

Sakalman-Sanshaya Harinee,
Bhav-Bhavorjit Pap-Niwarinee
Sakal-Sadgun- Santati Dharinee,
Haratu Me Duritani - Saraswati.

Prabal - Vairi - Samooh - Vimardinee
Nrip - Sabhadishu - Man - Vivardhinee
Natjanodit - Sankat - Bhedinee,
Haratu - Me Duritani - Saraswati.

Sakalsadgun Bhushit Vigraha,
Nijtanu - Dyootitarijit Vigraha,
Vishadvastradhara Vishadardhyuti,
Haratu - Me - Duritani- Sraswati.

Bhava - Dawanal- Shanti - Tanunapa,
Dwit-Karair - Kriti - Mantra - Krit - Kripa,
Bhawikchit - Vishudhi - Vidhayinee,



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Haratu - Me - Duritani - Saraswati.

Tanubhrutam Jadatam - Pahaty Ya
Vibudhatam Dadate Muditarchaya
Matimatam - Janneeti Matta-Tra-Sa,
Haratu - Me- Duritani - Sraswati.

Sakalshastra - Payonichinouh Para,
Vishad Keerti - Dharangit Mohara,
Jinvaranan - Padma - Niwasinee,
Haratu - Me - Duritani - Saraswati.

Eetham Shree Shrutdewata,
Bhagawati Vidwajjananam - Prasoon,
Samyag- Gyan - Var - Pradha,
Ghantamonir - Nashinee - Dehinam
Shreyah Shree Vardhayinee Suvidhina Sampojeeta Sanstuta
Dushkarmanya - Pahritya - Me - Viddhatam Samyak Shrutam Sarvada.

**POOJAN:**

!!Namorhat Siddhacharyopadhyay Sarva Sadhubhyah!!

1. Eam Hreem Shreem Mantraroope! Vibudh Jannute! Dev-Devendravandye! Chanch -



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Chandravadate! Kshapit - Kalimale! Har - Nihar - Goure! Bheeme! Bheematt - Hase! Bhava-Bhaya- Harane! Bhairave! Bheemroope! Hram - Hreem- Hrumkar Nade! Mam-Mansi - Sada - Sharde Devi Teeshtha.

Om Hreem, Ghishnayai, Gheeryai, Matye, Meghayee, Watche, Vibhavayai, Saraswatyai, Ghire, Vanyai, Bharatyai, Bhashshayai, Brahmanyai, Shree Saraswatye Gandham, Pushpam, Dhoopam, Deepam, Akshatam, Naivedyam, Phalani Yajamahe Swahaa.

2. Ha Pakshee Beejgarbhe! Survar-Ramani Vandeeta Nek Rupe! Kopam Vam Jham Vidheyam Dharitdharivare! Yoginam Yo-Gamye! Ham-Ham Sah Swarg-Rajaih, Pratidin - Namite! Prastuta Lap-Paye, Daityendrerdhyaymane! Mam Mansi Sada Sharde! Devi! Tishtha!!

Om Hreem Margadhipriyaye, Sarveshverye, Mahagourye, Shankeryai, Bhaktavatsalaye, Roudreyai, Chandalinyai, Chandye, Bhairvye, Vaishnaveye, Jayaye, Gayatreye, Shri Saraswatye.............. Swahaa.



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

3. Daityaidatyarinathair Namit Padyuge! Bhaktipoorvam Trisandhyam, Yakshaih Siddaisch Namarai, Rahmahmikaya, Deh Kantyati Kantaih! Sham, Eem, Oom, Prasfutabhakshar - Var Mriduna, Suswarena, Surenatyant Prodviyamane Mam Mansi Sada Sharde! Devi! Teeshtha.

Om Hreem Chaturbahave, Komaryai, Parameshwaryer, Devmatre, Akshayaye, Nityaye, Tripurbhairavye, Trailokyaswaminye, Daivyai, Mankayaih, Karunyasutrinye, Shulinye, Shri Saraswatye............Swhaa.

4. Ksham Kshim Kshum Dhyey-Rupe! Han Visham Visham, Sthavaram, Jangamam Cha Sansare Sansrutanam Tav Charan Yoogam, Sarva-Kalam Naranam! Avyakte, Yakt-Rupe! Pranat Narvare! Brahmarupe! Swaroope! Aim, Kleem, Kroom, Yogigamye! Mam Mansi Sada Sharde! Devi Teeshtha!!

Om Breem Padminyai, Lakshmyai, Pankajvasinye, Chamundaye, Khaicharye, Shantaye, Hunkarayai, Chandrashekheryai, Warahye, Vijayayem, Antardwarye, Karmye, Shree Saraswatye...... Swahaa.



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

5. Sampoornatyant Shobhai! Shashdhar – Dhawale, Ras-Lawanya- Bhootai Ramyai-R-Vyaktaisch, Kantai-R-Nijkarnikardi, Schandrikakar Bhasaih! Asmakinam-Nitantodit-Manudiwasam, Kalmasham Kshalyanti, Shram, Shreem, Shroom Mantra-Rupe Mam Mansi Sada Sharde! Devi! Tishtha!!

Om Hreem Hatryere, Sureshwarye, Chandrananaye, Jagdhatrey, Vinambj-Kar-Dwayaye, Subhagaye, Savargaye, Swaha, Jambhinye, Stambhinye Ishwaraye, Kalyei, Shri Saraswatye ........ Swahaa.

6. Bhaswat Padmasanasthe! Jinmukh Nirte! Padmahaste, Prashaste! Jhram, Jhreem, Jhran, Jhrah, Pavitre! Har-Har Duritam Dushta Sanjust Cheshtam! Vachalabhih Swa-Shaktya, Tridash Yuwatibhih Pratyaham Poojya Pade! Cham Cham Chandra – Karale! Mam-Manasi Sada Sharde! Devi ! Teeshtha!!

Om Hreem Kapalinyai, Kaulyai, Vighayai, Ratreyai, Trilochanayai, Pustakvyagrahastaye, Yoginyai, Amit Vikramayai, Sarva-Siddhi-Karyai, Sandhyayai, Khanginyai, Kamaroopinyai, Shree Saraswatye..........Swahaa.



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

7. Namreebhoot Kshitish Pravarmani, Mukutooddhrishta – Padarvinde! Padmasthe! Padma Netre! Gajpati – Gamane! Hans-Yane! Pramane! Keertee Shree Vridhi-Chakre! Jay Vijay Jaye! Gouri Gandhari Yuktee Dhyeyadhyeya – Swaroope! Mam Mansi Sada Sharde! Devi! Teeshtha!!

Om Hreem Sarva Satva Hitaye, Pragyayai, Shivayai, Shuklayai, Manoramayai, Mangalya Ruchi Karay, Dhanyayai, Kanan Vasinyai, Agyan Nishinyai, Jainyai, Agyan Nishi – Bhaskeryai, Agyan Jan Martray!! Shree Saraswatye............. Swahaa.

8. Vidyujjwalam Shushubhram Pravar Manimayi Maksha Malam Suroopam Hastabje Dharayanti, Dinmanu Pathatamashtakam, Sharadam Cha! Nagendre Rindra Chandrair Manuj, Muni Ganaih Sanstuta Yaa Cha Devi Sa Kalyanani Devi Mam Mansi Sada. Sharde! Devi! Tishtha!!

Om Hreem Agyanodadhishoshinyai, Gyan Dayai, Narmadayai, Gangayai, Sitayai, Vageeshwaryai, Dhrityai, Ainkar Mastakayai, Preetyai, Hreenkar Vadanaye, Hutyai, Klinkar Hridayaye, Shree



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Sarawatye........... Swahaa.

9. Janatandhakar Harnark, Samnibhegunsantati, Prathan Wak, Samuchchye, Shrut Devate Atra, Jinraj Pujane, Kumatirvinashay Kurushva Vanchhitam!!

Om Hreem Shaktye, Ashtabijayai, Niraksharayai, Niramayayai, Jagat Sthayai, Nih Prapanchayai, Chanchalayai, Chalayai, Nirutpannaiye, Samutpannaye, Anataye, Gaganopamaye, Bhgwatyai, Vagdevataye, Veena Pustak, Mouktikakshavalaya, Shwetabja Mandit Karaye, Shashadharnikar, Gouri Hans Vahanayai. Shree Saraswatye............. Swahaa.

10. **Vastra Pooja**

Sharada Sharadambhoj Vadana, Vadanamjuje, Sarvada Sarvadasmakam, Sannidhin Sannidhim Kriyat.

Om Hreem Shreem Bhagwatye, Kewal Gyan Swaroopaye, Loka-Lok Prakashikaye Shree Saraswatye Vastram Pooja Yajamaheswahaa.

11. **Shodashabharanam Pooja**

Kancheesutra Vinutsar Nichitaih Keyur



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Satkundalai-R-Manjeerangada Mudrikadi Mukut Pralambikavasakih, Anch Chyatik Pattikadi Vilagad Graiveyakai-R-Rbhushaniah, Sindurang Sukanti Varsha Subhagai Sampoojyama Vayam.

Om Hreem Shreem Bhagwatyai Kewalgyan Swaroopayai Loka-Lok Prakashikayai Shree Saraswatye Shodasha Bharanam Pooja Yaja Mahe Swahaa.

❖ ❖ ❖



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

## !!SIDDH SARASWATACHARYA SHREE BAPPA BHATTI SUREESHWAR VIRCHIT SHRI SIDDH SARASWAT STAV!!

## SHREE SHARDA STOTRA

Kalam ral vihangam vahana, sit dukul vibhushana lepahnapranat bhoomi roohamrit sarini, pravar deh vibhabhar dharini amritpoorna kamandalu harini, tri dash danava manava sevita bhagawati peramaiva saraswati, man punatu sada nayanambujam.

Jinpati prathita khil vangmany, ganedharanam mandap nritakee guru mukhambaj khelan hansika, vijayate jagati shrut dewata, Amritdeedhati bimba samananam, Trijagati jan nirmit mananam. Navarasamrit vichee sarasawatim, Pramuditah pranamami Saraswatim.

Witata Ketaka patra vilochane, vihit sansruti dushkrit mochane Dhawal paksha Vihangam lanchhite, Jai saraswati purit vanchhite Bhavadanugrih lesh tarangita Staduchitam Pravadanti vipaschchitah. Nripsabhasu yatah Kamalabala, Kuch- Kala lalanani Vitanvate.

Gata dhana api hi tvadnugrihat, kalit komal Vakya



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Sughormayah. Chakit bal Kurang- Vilochana, Jan Manansi, haranti taram hara. kar Saro rooh Khelan Chanchala, tav Vibhati Pra Jap Malika. Shrit payonidhi madhya vikaswaroh, jjvaltarang Kalagrih sagriha.

Dwiranda kesarimari bhujangama, Sahan taskar raj roojam bhayam. Tav gunavali gan taranginam, na bhavinam bhavati shrut devata. Om hreem Kleem bleem tatah shreem tadnuhs-k-I hreem atho ain namo nte. Laksham Sakshajjapedyah Kar Sam Vidhina, Sattapa Brahamcharee. Niryantim Chandra-bimba-tkalyanti Manasa twam, Jagechchandrikabham So tyartham VahniKunde Vihit ghreet hutih, Syad dashan Shen vidvan. Re-re lakshan kavya natak katha champu samalokane, Kkayasam Chitnoshi balish! Mutha, Kim namra-vaktrambujah! Bhaktya radhay mantra raj mahasa-ne-nanisham bharatim, yen twan kavita vitan savita dweit prabudhayase.

❖ ❖ ❖



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

❖ ❖ ❖

Chanch Chandramukheem Prasiddh Mahima, Swachhandya Rajya Pradah.
Nayasen Surasureshwar Ganeh Rabharchita Bhaktitah
Devi Sanstut Vaibhava Malayaja Lepangrangdyutih,
Sa-Mam Patu Saraswati Bhagawati Trailokya Sanjeevanam,
Stavan Met Danek Gunanvitam,
Pathati Yo Bhavikah Pramana Prage
Sa Sahasa Madhurai-R-Vachana Mritai-R
Nrip-Gana, Napeeramjayati Sphootam

**Om Hreem Kleem Bleem Shreem Hasakal Hreem Aim Namah.**

❖ ❖ ❖



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

# શ્રી નમસ્કાર મહામંત્ર

नमो अरिहंताणं

नमो सिद्धाणं

नमो आयरियाणं

नमो उवज्झायाणं

नमो लोए सव्वसाहूणं

एसो पंचनमुक्कारो

सव्वपावप्पणासणो

मंगलाणं च सव्वेसिं

पढमं हवइ मंगलं

અરિહંત પરમાત્માને મારા નમસ્કાર થાઓ

સિદ્ધ પરમાત્માને મારા નમસ્કાર થાઓ

આચાર્ય ભગવંતોને મારા નમસ્કાર થાઓ

ઉપાધ્યાયજી મહારાજાઓને મારા નમસ્કાર થાઓ

લોકવર્તી સર્વ સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતોને મારા નમસ્કાર થાઓ

પંચ પરમેષ્ઠીને કરાયેલો આ નમસ્કાર

સર્વ પાપમલનો ક્ષય કરનાર છે

અને સર્વ મંગળોમાં

શ્રેષ્ઠ (પ્રથમ) મંગલ સ્વરૂપ છે.



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

## Namaskār Mahāmantra

Namō Arihantāṇaṃ

Namō Siddhāṇaṃ

Namō Āyariyāṇaṃ

Namō Uvajjhāyaṇaṃ

Namō Lōē Savvasāhūṇaṃ

Ēsō pañca namukkārō

Savvapāvappaṇāsaṇō

Maṅgalāṇaṃ Ca Savvēsiṃ

Paḍhamaṃ Havaī Maṅgalaṃ

I bow to Arihanta, the supreme soul.
I bow to Sidha, the perfect soul.
I bow to Acharya, the leader of the Sangh.
I bow to Upadhaya, who teaches all monks and nuns.
I bow to all monks and nuns in the world.
These five bows to these five revered souls will destroy bad deeds.
These are the foremost among all auspicious deeds.



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

## શ્રી ઉવસગ્ગહરં સ્તોત્ર

उवसग्गहरं पासं,
पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ।
विसहरविसनिन्नासं,
मंगलकल्लाणआवासं ।।१।।

સર્વ લોકોના ઉપસર્ગોને હરનાર પાર્શ્વ નામનો યક્ષ સેવક છે જેમને એવા, કર્મોના સમૂહથી મુકાયેલા, મિથ્યાત્વરૂપી વિષને ધારણ કરનારા કમઠના (તથા સર્પના) વિષનો નાશ કરનારા, અને સર્વ મંગલોના ભંડાર સ્વરૂપ એવા પાર્શ્વનાથ પરમાત્માને હું નમસ્કાર કરું છું. ॥૧॥

### Invocation Two

## Uvasaggharam Stotra (Invocation)

Uvasaggaharaṃ Pāsaṃ,
Pāsaṃ Vandāmi Kammadhaṇamukkaṃ ||
Visaharavisaninnāsaṃ,
Maṅgala Kallāṇa Aāvāsaṃ || 1 ||

May my obeisance be to Lord Pārśvanātha, who removes the trobules of all the people, who has a guard called Pārśvayaksha, who is free from the group of eight Karmas, and who removes the poison of false doctrines and the venom of Kamath, the demon by his special power and who is a rapositiry of all auspiciousness. || 1 ||



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विसहर-फुलिंग-मंतं
कंठे धारेइ जो सया मणुओ ।
तस्स गह-रोग-मारी-
दुट्ठजरा जंति उवसामं ।।२।।

મિથ્યાત્વના અને સર્પના ઝેરને ઉતારવામાં પ્રગટ પ્રભાવક એવા અઢાર અક્ષરના બનેલા "**નમિઊણ પાસ વિસહર વસહ જિણ ફુલિંગ**" આવા પ્રકારના વિષધર સ્ફુલિંગ નામના મંત્રને જે મનુષ્યો હંમેશાં કંઠમાં ધારણ કરે છે. (એટલે કે કંઠસ્થ કરીને ગાય છે. અથવા તેનું માદળીયું બનાવી કંઠમાં રાખે છે) તેને પીડતા ગ્રહો, રોગો, મરકી અને દુષ્ટ (ભયંકર આકરો) તાવ પણ શાન્તિને પામે છે. ॥૨॥

**Visaharaphuliṅga mantaṃ
Kaṇṭhē Dhārēī Jō Sayā Maṇuō |
Tassa Gaha Rōga Mārī
Duṭṭha Jarā Janti Uvasāmaṃ || 2 ||**

Those people who wear on their necks/throats (i.e. who recite regularly, or wear it as an armlet) the spell called Visadhara Sfullinga - "Namiuṇa Pāsa Visahara Vasaha Jiṇā Phuliṅga", and which is instantly effective in removing the poison the false doctrines as well as of serpents, and have their evil and tormenting planets, plague as well as severe afflictions such as fever etc., pacified and removed. || 2 ||



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चिट्ठउ दूरे मंतो,
तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ ।
नरतिरिएसु वि जीवा,
पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥३॥

તમારો પ્રભાવશાલી મંત્ર તો દૂર રહો, પરંતુ તમને કરેલો પ્રણામ પણ બહુ ફલવાળો થાય છે. જે પ્રણામના પ્રતાપથી જીવો મનુષ્ય અને તિર્યંચોના ભવોમાં દુઃખ અને દૌર્ભાગ્ય પામતા નથી ॥૩॥

**Ciṭṭhau Dūrē Mantō**
**Tujjha Paṇāmō Vi Bahuphalō Hōī I**
**Naratiriēsu Vi Jīvā,**
**Pāvanti Na Dukkhadōgaccaṃ II 3 II**

Leave aside the powerful mantra dedicated to you, even an obeissance offered to you yields more fruits. Living beings do not fall prey to misery and poverty when they go through the lives of human beings as well as animals and birds through the power of such an obeissance. II 3 II



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुह सम्मत्ते लद्धे,
चिंतामणि- कप्पपायवब्भहिए ।
पावंति अविग्घेणं,
जीवा अयरामरं ठाणं ।।४।।

ચિંતામણિ રત્ન અને કલ્પવૃક્ષથી પણ અધિક એવું તમારૂં સમ્યક્ત્વ પ્રાપ્ત થયે છતે જીવો કોઈ પણ પ્રકારના વિઘ્ન વિના અજરામર (મોક્ષ) સ્થાનને પામે છે. ॥૪॥

**Tuha Sammattē Laddhē,**
**Cintāmaṇi Kappapāyavabbhahiaē I**
**Pāvanti Avigdhēṇaṃ,**
**Jīvā Ayarāmaraṃ Ṭhāṇaṃ II 4 II**

Human beings when they attain the right faith whi is superior to 'Cintāmaṇi' jewel and desire-fulfilli 'Kalpa' tree, will not have any obstacles in attaini liberation. II 4 II



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इअ संथुओ महायस
भत्तिब्भरनिब्भरेण हियएण ।
ता देव दिज्झ बोहिं,
भवे भवे पास जिणचंद ।।५।।

મહા યશવાળા એવા હે પાર્શ્વનાથ પ્રભુ ! તમે આ પ્રમાણે ભક્તિના સમૂહથી ભરેલા હૈયા દ્વારા મારા વડે સ્તવાયા છો (સ્તુતિ કરાયા છો). તેથી હે પાર્શ્વનાથ જિનેશ્વર ! ભવોભવમાં તમારા ચરણોની સેવા કરવા સ્વરૂપ બોધિબીજ મને આપજો. ।।૫।।

Ia Santhuō Mahāyaśa
Bhattibbharanibbharēṇa Hiyaēṇa I
Tā Dēva Dijjha Bōhiṃ,
Bhavē Bhavē Pāsa Jiṇacanda II 5 II

O Lord Pārśvanātha, you who are possessed of great glory; you are thus praised and invoked by me with a devoted heart. Hence, O glorious Pārśvanātha, Kindly grant me the Spiritual Wisdom (Bodhibija) life after life. II 5 II



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

## બૃહચ્છાન્તિ સ્તોત્ર

भो भो भव्याः ! शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्वमेतद् ।
ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हता भक्तिभाजः ।।
तेषां शान्तिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावा-
दारोग्यश्रीधृतिमतिकरी क्लेशविध्वंसहेतुः ।।१।।

હે હે ભવ્ય જીવો ! પ્રાસંગિક આ સર્વ વચન તમે સાંભળો, કે ત્રણ ભુવનના ગુરુ એવા શ્રી પરમાત્માની તીર્થયાત્રામાં જે મનુષ્યો અરિહંત ભગવન્તોની ભક્તિ કરનારા છે તેઓને (ઘરે) અરિહંતાદિ ભગવન્તોના પ્રભાવથી આરોગ્ય, લક્ષ્મી, ધીરજ અને બુદ્ધિને કરનારી અને ક્લેશ-કંકાસના વિનાશનું કારણ એવી શાન્તિ થજો. શાન્તિ થજો. ||૧||

## Invocation Nine
## Bruhatchhanti Stotra (Invocation)

Bhō Bhō Bhavyāḥ ! Śṛṇuta Vacanaṃ Prastutaṃ Sarvamētad |

Yē Yātrāyāṃ Tribhuvanagurōrārhatāṃ Bhaktibhājaḥ||

Tēṣāṃ Śāntirbhavatu Bhavatāmarhadādi prabhāvā- |

Dārōgyaśrīdhṛtimatikarī Kalēśavidhvaṃsahētuḥ ||1||

O you exalted Souls ! May you listen to these teachings, that those men who are devotees of the Lords Arihanta, during their pilgrimage of the Supreme Souls; the lords, who are the lords of the three worlds, may they have peace in their houses through the power of Lord Arihanta, the peace which brings about health, wealth, patience and itelligence and without any quarrel and fight. ||1||



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भो भो भव्यलोका ! इह हि भरतैरावतविदेहसंभवानां समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकम्पानन्तरमवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सुघोषाघंटाचालनानन्तरं सकल-सुरासुरेन्द्रैः सह समागत्य सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा, गत्वा कनकाद्रिशृङ्गे विहितजन्माभिषेकः शान्तिमुद्घोषयति, यथा ततोहम् कृतानुकारमिति कृत्वा महाजनो येन गतः स पन्थाः इति भव्यजनैः सह समेत्य स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय शान्तिमुद्घोषयामि, तत्पूजायात्रास्नात्रादिमहोत्सवानन्तरमिति कृत्वा, कर्ण दत्वा निशम्यतां निशम्यतां स्वाहा ।।

અરે અરે હે ભવ્ય લોકો ! આ જ મૃત્યુલોકમાં ભરતક્ષેત્ર, ઐરાવત ક્ષેત્ર અને મહાવિદેહક્ષેત્રમાં જન્મેલા સર્વ તીર્થંકર ભગવન્તોના જન્મ સમયે આસન કંપાયમાન થયા પછી અવધિજ્ઞાનથી (પ્રભુનો જન્મ) જાણીને સૌધર્મ નામના પ્રથમ દેવલોકનો સ્વામી સુઘોષા નામની ઘંટા વગડાવ્યા પછી સર્વ દેવો, દાનવો અને ઈન્દ્રો સાથે આવીને વિનય પૂર્વક અરિહંત ભગવાનને હાથમાં લઈને મેરૂ પર્વતના શિખર ઉપર જઈને કર્યો છે પરમાત્માનો જન્માભિષેક જેઓએ એવા તે ઈન્દ્ર જેમ શાન્તિ થાઓ, શાન્તિ થાઓ એવી શાન્તિની ઉદ્‌ઘોષણા કરે છે. તેવી જ રીતે કરેલાનું અનુકરણ કરવું જોઈએ એમ સમજીને તથા મોટા માણસો (ઈન્દ્રાદિ દેવો)



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

જે માર્ગે ગયા હોય તે જ સાચો માર્ગ છે એમ સમજીને ભવ્ય જીવોની સાથે મળીને સ્નાત્ર ભણાવવાની પીઠિકા ઉપર સ્નાત્ર કરીને હું પણ શાન્તિની ઉદ્દ્ઘોષણા કરૂં છું. તેથી તે પરમાત્માની પૂજા, યાત્રા, અને સ્નાત્રાદિનો મહોત્સવ કર્યા પછી કાન દઈને તમે સાંભળો, તમે સાંભળો.

Bhō Bhō Bhavyalōkā Īha Hi Bharatairāvata Vidēhasambhavānāṃ Samastatīrthaṅkṛtāṃ Janmanyāsanaprakampānantaramavadhinā Vijñāya Saudharmādhipatiḥ Sughōṣāghaṇṭā-cālanāntaraṃ Sakala Sakkāsurāsurēndraih Saha Samāgatya Savinayamarhad-bhaṭṭārakaṃ Gṛhitvā, Gatvā Kanakādriśṛṅgē a Vihita janmābhiṣēkah Śāntamudghōṣayati, Yathā Tatōhm "Kṛtānukāramiti Kṛtvā" "Mahājanō Yēna Gatah Sa Panthā." Iti Bhavyajanaiḥ Saha Samētya Snātrapīṭhē Snātraṃ Vidhāya Śāntimudghōṣayāmi, Tatpūjāyātrāsnātrādi- mahōtsavānantaramiti Kṛtvā, Kaṃṇ Dattvā Niśamyatāṃ Niśamyatāṃ Svāhā ||



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

O you Exalted ones ! Like the lord of the gods, who, at the time of the birth of all the Tirthankara lords who are born in this world of the mortals, the land of Bharata, the land of Airavata and the land of Mahavideha, upon his seat being shaken, coming to know (of the birth of the lord) through intuition, the first lord of the world of gods named Saudharma, causing the bell called Sughosa to be rung, and accompained by all the gods, demons and the Indras, taking the lord Arihanta into his hands, and climibing up the summit of the mount Meru, and celebrating the birth of the lord, announces the words of peace "Let there be peace ! Let there be peace !", I also, realising that "One should imitate what is already done" and "That is the right path which is beaten by the great people", joining hands with the exalted souls to perform the Snātra on the dais meant for reciting the Snātra, proclaim peace. So you are requested again and again to listen patiently, after performing the worship, pilgrimage and the celebration called Snātra etc.



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ॐ पुण्याहं पुण्याहं, प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्, भगवन्तोर्हन्तः, सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनस्त्रिलोकनाथास्त्रिलोकमहितास्त्रि-लोकपूज्यास्त्रिलोकेश्वरास्त्रिलोकोद्योतकराः ।।

ॐ ऋषभ-अजित-संभव-अभिनंदन-सुमति-पद्मप्रभ-सुपार्श्व-चंद्रप्रभ-सुविधि-शीतल-श्रेयांस-वासुपूज्य-विमल-अनंत-धर्म-शान्ति-कुंथु-अर-मल्लि-मुनिसुव्रत-नमि-नेमि-पार्श्व-वर्धमानान्ता जिनाः शान्ताः शान्तिकरा भवन्तु स्वाहा ।।

આજનો દિવસ ઘણો જ પવિત્ર છે. ઘણો જ પવિત્ર છે. પ્રસન્ન થાઓ, પ્રસન્ન થાઓ, અરિહંત તીર્થંકર ભગવન્તો સર્વજ્ઞ છે. સર્વદર્શી છે. ત્રણલોકના નાથ છે. ત્રણે લોક વડે પૂજાયા છે. ત્રણે લોકને પૂજ્ય છે. ત્રણે લોકના સ્વામી છે અને ત્રણે લોકમાં પ્રકાશ કરનારા છે.

તથા શ્રી ઋષભદેવ, અજિતનાથ, સંભવનાથ, અભિનંદન સ્વામી, સુમતિનાથ, પદ્મપ્રભસ્વામી, સુપાર્શ્વનાથ, ચંદ્રપ્રભસ્વામી, સુવિધિનાથ, શીતળનાથ, શ્રેયાંસનાથ, વાસુપૂજ્યસ્વામી, વિમલનાથ, અનંતનાથ, ધર્મનાથ, શાન્તિનાથ, કુંથુનાથ, અરનાથ, મલ્લિનાથ, મુનિસુવ્રતસ્વામી, નમિનાથ, નેમિનાથ પાર્શ્વનાથ અને વર્ધમાન સ્વામી સુધીના શાન્ત સ્વભાવવાળા તીર્થંકર ભગવન્તો સર્વત્ર શાન્તિ કરનારા થજો. શાન્તિ કરનારા થજો. ॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Ōṃ Puṇyāhaṃ Puṇyāhaṃ, Priyantāṃ Prīyantām, Bhagavantōrhantaḥ, Sarvajñāḥ Sarvadarśinastrilōkanāthāstrilōkamahitāstri-lōkapūjyāstrilōkēśvarāstrilōkōdyōtakarāḥ I

Ōṃ Ṛṣabha-Ajita-Sambhava-Abhinandana-Sumati-Padmaprabha-Supārśva-Candraprabha-Suvidhi-Śītala-Śrēyāṃsa-Vāsupūjya-Vimala-Ananta-Dharma-Śānti-Kunthu-Ara-Malli-Munisuvrata-Nami-Nēmi-Pārśva-Vadhamānānta Jināḥ Śāntāḥ Śāntikarā Bhavantu Svāhā II

Today is a great holy day. Be happy, be habbpy. The Lord Arihanta is Omniscient; he perceives everything. He is the lord of three worlds. Every one from three worlds worships him. He is worthy of worship from them. He enlightens the three worlds.

Let the lords Rushabhdeva, Ajitanatha, Sambhavanatha, Abhinandana Swami, Sumatinatha, Padmaprabha Swami, Suparsvanatha, Candraprabha Swami, Suvidhinatha, Shitalnath, Sreyansanatha, Vasupujya Swami, Vimalnatha, Anantanatha, Dharmanatha, Shantinatha, Kunthunatha, Aranatha, Mallinatha, Muni Suvrata Swami, Naminatha, Neminatha, Parśvanatha and Vardhamana Swami, spread peace everywhere. II



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ॐ मुनयो मुनिप्रवरा रिपुविजयदुर्भिक्षकान्तारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा ।।
ॐ ह्रीं श्रीं धृति-मति-कीर्ति-कान्ति-बुद्धि-लक्ष्मी-मेधा-विद्यासाधन-प्रवेश-निवेशनेषु सुगृहीतनामानो जयन्तु ते जिनेन्द्राः ।। ॐ रोहिणी, प्रज्ञप्ति, वज्रशृंखला, वज्रांकुशी-अप्रतिचक्रा-पुरुषदत्ता-काली-महाकाली-गौरी-गान्धारी-सर्वास्त्रा-महाज्वाला-मानवी-वैरुट्या-अच्छुप्ता-मानसी-महामानसी षोडश विद्यादेव्यो रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा ।।

તથા મુનિઓમાં શ્રેષ્ઠ એવા સાધુસંતો શત્રુના વિજય કાળે, દુકાળના અવસરે, જંગલમાં, અને ભયંકર માર્ગોમાં અમારૂં હંમેશાં રક્ષણ કરો, રક્ષણ કરો. તથા ધીરજ, મતિ, કીર્તિ, કાન્તિ, બુદ્ધિ, લક્ષ્મી, તાર્કિક શક્તિ અને વિદ્યાદિની સાધનામાં પ્રવેશ કરતાં તથા સાધનામાં બેસતાં સારી રીતે ગ્રહણ કરાયું છે. નામ જેઓનું એવા તે જિનેશ્વર ભગવન્તો જય પામો જય પામો. તથા રોહિણી, પ્રજ્ઞપ્તિ, વજ્રશ્રૃંખલા, વજ્રાંકુશી, અપ્રતિચક્રા, પુરુષદત્તા, કાલી, મહાકાલી, ગૌરી, ગાન્ધારી, સર્વાસ્ત્રા, મહાજ્વાલા, માનવી, વૈરુટ્યા, અચ્છુપ્તા, માનસી, મહામાનસી, એમ સોળે વિદ્યાદેવીઓ હંમેશાં અમારું રક્ષણ કરો, રક્ષણ કરો. ॥

Ōṃ Munayō Munipravarā Ripuvijaya - durbhikṣakāntārēṣu Durgamārgēṣu



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Rakṣantō Vō Nityaṃ Svāhā ||
Ōṃ Hrīṃ Śrīṃ Dhṛtimatikīrtikāntibuddhi-lakṣmīmēdhāvidyāsādhanapravēśa- nivē-śanēṣu sugṛhītanāmānō Jayantu Tē Jinēndrāḥ || Ōṃ Rōhiṇī-Prajñapti-Vajra-śṛṅkhalā-Vajrāṅkuśī-Apraticakrā-Purūṣa-dattā-Kālī-Mahākālī-Gaurī-Gāndhārī-Sarvāstrā-Mahājvālā-Mānavī-Vairuṭyā-Acchuptā-Mānasī-Mahāmānasī-Ṣōḍaśa-Vidyādēvyō Rakṣantu Vō Nityaṃ Svāhā ||

May the best among the monks and the saints protect us at all times, at the time of enemy victory, at the time of famine, in the forest and in the dangerous roads. Let the lord Jinas, whose name is very well recited, while embarking on the propitiation of patience, intelligence, glory, lustre, wealth, logic also knowledge etc., be victorious, be victorious. (And) May the sixteen goddesses of Learning called Rōhini, Prajñapti, Vajraśṛṅkhalā, Vajrāṅkuśi, Apraticakrā, Purusadattā, Kālī, Māhākāli, Gauri, Gāndhāri, Sarvāstrā Mahājvālā, Mānavi, Vairuṭā, Acchuptā, Mānasī, and Mahāmānasī protect us here-after.



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ॐ आचार्योपाध्याय-प्रभृति-चातुर्वर्णस्य श्रीश्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ।। ॐ ग्रहाश्चन्द्र-सूर्यांगारक-बुध-बृहस्पति-शुक्र-शनैश्चर-राहुकेतु-सहिताः सलोकपालाः सोम-यम-वरुण-कुबेर-वासवादित्य-स्कन्द-विनायकोपेता ये चान्येपि ग्राम-नगर-क्षेत्र-देवता-दयस्ते सर्वे प्रीयन्तां प्रीयन्तां, अक्षीणकोश-कोष्ठागारा नरपतयश्च भवन्तु स्वाहा ।।

તથા આચાર્ય મહારાજ, અને ઉપાધ્યાયજી મહારાજ વગેરે ચારે પ્રકારના શ્રી શ્રમણસંઘની શાન્તિ થાઓ, તુષ્ટિ થાઓ, અને પુષ્ટિ થાઓ તથા ચંદ્ર, સૂર્ય, અંગારક, બુધ, બૃહસ્પતિ, શુક્ર, શનૈશ્ચર, રાહુ, કેતુથી સહિત જે જે ગ્રહો છે, તે, તથા સોમ, યમ, વરુણ અને કુબેર તથા ઈન્દ્ર, સૂર્ય, સ્કંદ અને વિનાયકાદિ સહિત જે જે લોકપાલ દેવો છે તે, તથા બીજા પણ ગામ, નગર અને ક્ષેત્રના નાયક જે જે દેવો છે તે સર્વે અમારા ઉપર ખુશ થાઓ ખુશ થાઓ. અને અમારા દેશના રાજાઓ પણ હંમેશાં અખુટ ધન ભંડાર અને અખુટ ધાન્યભંડાર વાળા થાઓ.

Ōṃ Ācāryōpādhyāyaprabhṛticāruvṛṇasya Śrīśramaṇasanghasya Śāntirbhavatu Tuṣṭirbhavatu Puṣṭirbhavatu II



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Ōṃ Grahāścandrasūryāṅgārakabudhabṛhaspati-Śukraśanaiścararāhukētusahita Salōkapālā Sōmayamavaruṇakubēravāsavāditya-skandavināyakōpētā, Yē Cānyēpi Grāma-Nagarakṣētradēvatādayastē Sarvē Prīyantāṃ Prīyantāṃ, Akṣīṇakōśa-kōṣṭāgārā Narapatayaśca Bhavantu Svāhā ||

Let the fourfold Jaina Sangh consisting of the Rev. Acharya, Upadhyaya, etc. attain peace, fulfilment and progress. Let the planets such as the Moon, the Sun, the Mars, the Mercury, the Jupiter, the Venus and the Saturn along with the Rahu and the Ketu as well as the different guardians of the world such as Soma, Yama, Varuna and Kubera along with Indra, Surya, Skanda, Vinayaka etc; and the other deities of village, city and region, be pleased with us; be pleased with us. May the kings of our country, always, possess ample treasures of wealth as well as plenty of food grains. ||



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ॐ पुत्र-मित्र-भ्रातृ-कलत्र-सुहृत्-स्वजन-सम्बन्धि-बन्धुवर्ग-सहिता नित्यं चामोद-प्रमोदकारिणः अस्मिंश्च भूमंडलायतन-निवासि-साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविकाणां-रोगोपसर्ग-व्याधि-दुःख-दुर्भिक्ष-दौर्मनस्योपशमनाय शान्तिर्भवतु ।।
ॐ तुष्टि-पुष्टि-ऋद्धि-वृद्धि-मांगल्योत्सवाः सदा- प्रादुर्भूतानि पापानि शाम्यन्तु दुरितानि, शत्रवः पराङ्मुखा भवन्तु स्वाहा ।।

તથા પુત્ર, મિત્ર, ભાઈ, પત્ની, સજ્જન અને પોતાના કુટુંબીઓ સંબંધી મિત્ર વર્ગ સહિત સર્વ મનુષ્યો હંમેશાં આનંદ-પ્રમોદ કરનારા થજો. આ પૃથ્વી મંડલ ઉપર નિવાસ કરનારા સાધુ, સાધ્વી, શ્રાવક અને શ્રાવિકાઓના રોગ, ઉપસર્ગ, વ્યાધિ, દુઃખ, દુકાળ અને માનસિક દુષ્ટ વિચારોના ઉપશમન માટે શાન્તિ થાઓ, શાન્તિ થાઓ. તથા તુષ્ટિ, પુષ્ટિ, ઋધ્ધિ, વૃધ્ધિ અને મંગલભૂત એવા ઉત્સવો હંમેશાં થજો. પાપો શાન્ત થજો. દુઃખો અને શત્રુઓ અવળા મુખવાલા થજો. ॥

Ōṃ Putramitrabhrātṛkalatrasuhṛtsvajana-sambandhibandhuvargasahitā Nityaṃ cāmōda-pramōdakāriṇaḥ Asmiśca Bhū-maṇḍalā-yatananivāsisādhusādhvīśrāvaka-śrāvikāṇāṃ Rōgōpasarga vyādhi-duḥkha-



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

durbhikṣa - daurmanasyōpaśamanāya Śāntirbhavatu ||

Ōṃ Tuṣṭipuṣṭirdhdhivṛdhdhi-māṅgalyōtsavāḥ Sadā Prādurbhūtāni Pāpani Śāmyantu Duritāni Śatravaḥ Parāṅmukhā Bhavantu Svāhā ||

Let all the people, with their families and friends experience joy and happiness all the time. Let there be peace for the pacification of evil thoughts of the mind as well as of famine, misery, troubles and diseases of the laymen. Let there be festivals which mark auspiciousness, satisfaction, progress, prosperity and abundance. Let the sins subside. Let miseries and enemies turn their faces away (from us).



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीमते शान्तिनाथाय नमः शान्तिविधायिने ।
त्रैलोक्यस्यामराधीश, - मुकुटाभ्यर्चिताङ्घ्रये ।।१।।
शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे गुरुः ।
शान्तिरेव सदा तेषां येषां शान्ति गृहे गृहे ।।२।।

ત્રણે લોકની શાન્તિને કરનારા, તથા ઈન્દ્રોના મુકુટો વડે પૂજાયા છે ચરણો જેના એવા શ્રી શાન્તિનાથ ભગવાનને અમારા નમસ્કાર હો. તથા શાન્તિને કરનારા, લક્ષ્મીવાળા, અને મારા ધર્મગુરૂ એવા શ્રી શાન્તિનાથ ભગવાન મને શાન્તિ દેખાડો. તથા હંમેશાં તેઓને શાન્તિ થજો કે જેઓનાં ઘરે ઘરે આ શાન્તિપાઠ ભણાય છે.

**Śrīmatē Śāntināthāya Namaḥ Śāntividhāyinē I**
**Trailōkyasyamarādhīśa, Mukuṭābhyarcitāṅghrayē II1II**
**Śāntih Śāntikaraḥ Śrīmān, Śānti Diśatu Mē Guruḥ I**
**Śāntirēva Sadā Tēṣāṃ Yēṣāṃ Śāntir Gṛhē Gṛhē II2II**

May our obeisance be to Lord Shantinatha, who has been worshipped by the lord Indras and who brings penle the three worlds. May lord Shantinatha, who is a peace maker and welathy by the virtue of the soul and who is my master, show me peace. Let those people have peace at whose houses this peaceful (chart) is recited.



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उन्मृष्ट-रिष्ट-दुष्ट-ग्रहगति-दुःस्वप्न-दुर्निमित्तादिः ।
संपादित-हितसंपन्नामग्रहणं जयति शान्तेः ।।३।।
श्री संघ-जगज्जनपद-राजाधिप-राजसन्निवेशानाम् ।
गोष्ठिक-पुरमुख्याणां, व्याहरणैर्व्याहरेच्छान्तिम् ।।४।।

અવળાં (દુઃખદાયી) નક્ષત્રો હોય, દુષ્ટ ગ્રહોની ગતિ હોય, દુષ્ટ સ્વપ્નો આવ્યાં હોય તથા ખરાબ નિમિત્તાદિ થયાં હોય ત્યારે પ્રાપ્ત થયું છે હિત અને સંપત્તિ જેનાથી એવું શ્રી શાન્તિનાથ ભગવાનનું નામ ગ્રહણ જ જય પામે છે. શ્રી સંઘ, જગદ્વર્તી દેશો, મહારાજાઓ, રાજાનાં રહેઠાણો, ધર્મસભાના સભ્યો તથા નગરના મુખ્ય મનુષ્યોનાં નામ લેવા પૂર્વક શાન્તિની ઉદ્ઘોષણા કરવી. તે આ પ્રમાણે -

*Unmṛṣṭa-riṣṭa-duṣṭa-grahagati-duḥsvapna-durnimittādiḥ I Sampādita-hitasampannāma-grahaṇaṃ Jyati Śāntēh II3II*
**Śrīsaṅgha - jagajjanapada - rājādhipa-rājasannivēśānāṃI Gōṣṭikapuramukhyāṇāṃ, vyāharaṇai rvyāharē cchāntim II 4 II**

When the stars are asdverse (painful), the planets are evil, dreams are bad and things are not good, recite and chant the name of Lord Shantinatha. This will secure welfare and prosperity and will achieve vicfory.

Recite Shanti (peace) stora by taking the names of the Jaina Sangha, all the countries, the emperor, palaces, road, crossings, citizens and the mayor of the city, as follows -



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीश्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु,
श्रीजनपदानां शान्तिर्भवतु ।
श्रीराजाधिपानां शान्तिर्भवतु,
श्रीराजसन्निवेशानां शान्तिर्भवतु ।
श्रीगोष्ठिकानां शान्तिर्भवतु,
श्रीपौरमुख्याणां शान्तिर्भवतु ।
श्रीपौरजनस्य शान्तिर्भवतु,
श्रीब्रह्मलोकस्य शान्तिर्भवतु ।।
ॐ स्वाहा, ॐ स्वाहा, ॐ श्री पार्श्वनाथाय स्वाहा ।।

શ્રી શ્રમણસંઘની શાન્તિ થાઓ,
શ્રી સકળ દેશોની શાન્તિ થાઓ,
શ્રી મહારાજાઓની શાન્તિ થાઓ,
શ્રી રાજાના રહેઠાણોના શાન્તિ થાઓ,
શ્રી ધર્મસભાના સભ્યોને શાન્તિ થાઓ,
શ્રી નગરના મુખ્ય માણસોને શાન્તિ થાઓ,
શ્રીનગરના સામાન્યમાણસોને શાન્તિ થાઓ.
તથા શ્રી સમસ્ત બ્રહ્મલોકને શાન્તિ થાઓ.
(બાકીના બધા મંત્રાક્ષરો છે).



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Śrīśramaṇasanghasya Śāntirbhavatu,

Śrī- janapadānāṃ Śāntirbhavatu I

Śrīrājādhipānāṃ Śāntirbhavatu,

Śrī- rājasannivēśānāṃ Śāntirbhavatu I

Śrīgōṣṭikānāṃ Śāntirbhavatu,

Śrī - pauramukhyāṇāṃ Śāntirbhavatu I

Śrīpaurajanasya Śāntirbhavatu,

Śrī-brahmalōkasya Śāntirbhavatu I

Ōṃ Svāhā, Ōṃ Svāhā, Ōṃ Śrī-Pārśvanāthāya Svāhā II

Let there be peace for the Jaina Sangha, let there be peace for all the countries, in the world let there be peace for the emperors, let there be peace for the kings' houses, let there be peace at the cross roads and the market places, let there be peace for the leading citizens as well as the common men and let ther be peace for the celestial worlds. (The rest are the words for chanting).



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एषा शान्तिः प्रतिष्ठा-यात्रा-स्नात्राद्यवसानेषु शान्तिकलशं गृहीत्वा, कुंकुम-चंदन-कर्पुरागरु-धूपवास-कुसुमांजलि-समेतः स्नात्रचतुष्किकायां, श्री संघसमेतः, शुचि-शुचि-वपुः-पुष्प-वस्त्र-चंदनाभरणालंकृतः पुष्पमालां कंठे कृत्वा, शान्तिमुद्घोषयित्वा, शान्तिपानीयं मस्तके दातव्यमिति ॥

તીર્થંકર પરમાત્માની પ્રતિષ્ઠાના પ્રસંગે, તીર્થયાત્રાદિના પ્રસંગે તથા સ્નાત્રાદિ ભણાવ્યા પછી અંતે શાન્તિકલશ હાથમાં લઈને, કેશર, ચંદન, કપુર અને અગરૂધૂપની સુગંધોથી વાસિત એવી ઉત્તમ કુસુમાંજલિ સહિત થઈને સ્નાત્ર ભણાવવાની પીઠિકા સામે (બેસીને) શ્રી સંઘ સાથે પવિત્રમાં પવિત્ર શરીર વાળા થઈને, ઉત્તમ પુષ્પો, વસ્ત્રો, ચંદન અને અલંકારોથી અલંકૃત થઈને ગળામાં પુષ્પોની માલા નાખીને આ શાન્તિપાઠ બોલવો. તથા શાન્તિની ઉદ્‌ઘોષણા કરીને માથા ઉપર આ શાન્તિકળશનું પાણી નાખવું. ॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Ēṣā Śāntih Pratiṣṭhā Yātrā Snātrādyavasānēṣu Śāntikalaśaṃ Gṛhitvā, Kuṅkamacandana-karpurāgarudhūpavāsakusumāñjalisamētaḥ Snātracatuṣkikāyāṃ, Śrīsaṅghasamētaaḥ, Śuci Śuci Vapuh Puṣpavastra-candanābharaṇālaṅkṛtaḥ Puṣpamālāṃ Kaṇṭhē Kṛtvā, Śāntimudghōṣayitvā, Śāntipānīyaṃ Mastakē Dātavyamiti ||

On the occasion of the consecration ceremony of Lord Tirhankara, the time of religious pilgrimage and after reciting the Snātra, Sutra, taking the pitcher in hands at the end of the ceremony, taking up an excellent offering of fragrant flowers with the scents of kumkum and sandal paste, camphor and incense of Agaru, sitting and reciting the Snātra, with pure mind and with the Jain Sangha, being decorated with exellent flowers, clothes, sandal paste and ornaments, one should recite this text for Shanti or peace. After proclaimation of peace, pour water from pitcher on statue, chanting the stotra for peace.



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नृत्यन्ति नृत्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजन्ति गायन्ति च मंगलानि ।
स्तोत्राणि गोत्राणि पठन्ति मंत्रान्,
कल्याणभाजो हि जिनाभिषेके ।।१।।
शिवमस्तु सर्वजगतः परहितनिरता भवन्तु भूतगणाः ।
दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखीभवतु लोकः ।।२।।

જિનેશ્વર પરમાત્માના જન્માભિષેક વખતે કલ્યાણમાં ભાગ લેનારા મનુષ્યો નાચ નાચે છે. મણિઓ અને પુષ્પોનો વરસાદ વરસાવે છે. મંગલપાઠો ગાય છે. સ્તોત્રો, ગાયનો અને મંત્રોને ભણે છે. ॥૧॥

સર્વ જગતનું કલ્યાણ થાઓ. પ્રાણીઓનો સમૂહ પરોપકારમાં પરાયણ થાઓ. દોષો નાશ પામો. અને લોક સર્વ ઠેકાણે સુખી થાઓ. ॥૨॥

**Nṛtyanti Nṛtyaṃ Maṇipuṣpavarṣaṃ, Sṛjanti Gāyanti Ca Maṅgalāni I Stōtrāṇi Gōtrāṇi Paṭhanti Mantrān Kalyāṇabhājō Hi Jinābhiṣēkē II 1 II**

**Śivamastu Sarvajagataḥ Parahitaniratā Bhavantu Bhūtagaṇāḥ I Dōṣāḥ Prayāntu Nāśaṃ, Sarvatra Sukhībhavantu Lōkāḥ II 2 II**

At the time of the birth bathing celebration of Lord Jina, the participants are dancing. They are showering gems and flowers, reciting auspicious songs, chant hymns, and recite religious texts. ||1||

May the whole world get the blessing. May all beings help each other. Let the bad deeds get destroyed and all human beings become happy. ||2||



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहं तित्थयरमाया, सिवादेवी तुम्ह नयरनिवासिनी ।
अम्ह सिवं तुम्ह सिवं, असिवोवसमं सिवं भवतु स्वाहा
।।३।।

उपसर्गाः क्षयं यान्ति च्छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः ।
मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ।।४।।

सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् ।
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ।।५।।

તમારા જ નગરમાં રહેવાવાળી, તીર્થંકર પરમાત્મા પ્રત્યે વાત્સલ્ય ભાવવાળી, હું કલ્યાણ કરનારી દેવી છું. અમારૂં પણ કલ્યાણ થાઓ અને તમારૂં પણ કલ્યાણ થાઓ અને સર્વ ઠેકાણે અશિવ શાન્ત થાઓ તથા કલ્યાણ જ કલ્યાણ થાઓ. ॥૩॥

જિનેશ્વર પરમાત્માને પૂજતે છતે ઉપસર્ગો ક્ષય પામે છે. વિઘ્નોની વેલડીઓ છેદાય છે અને મન પ્રસન્નતાને પામે છે. ॥૪॥

સર્વ મંગલોમાં મંગલભૂત, સર્વ કલ્યાણોનું કારણ, અને સર્વ ધર્મોમાં પ્રધાન એવું જૈનશાસન જય પામો, જય પામો. ॥૫॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Aham Titthayaramāyā, Sivādēvī Tumha Nayara Nivāsinī I
Amha Śivam Tumha Śivam, Asivōvasamam Sivambhavatu Svāhā II 3 II

Upasargāh Kṣayam Yānti Cchidyantē Vighnavallayah I
Manah Prasannatāmēti, Pūjyamānē Jinēśvarē II4II

Sarvamaṅgalamāṅgalya Sarvakalyāṇakāraṇam I
Pradhānam Sarva Dharamāṇām, Jainam Jayati Śāsanam II 5 II

I am the goddess that brings about wefare, living in your city and affectionate towards the lord Tirthankara. May good be to us and to you, too. May inauspicious be pacified everywhere and let only auspicious preyali. II3II

When one worships the Lord Jina, troubles and obstacles vanish, the creepers of obstructions are cut asunder and the mind attains bliss. II4II

May the Jaina order, which is the highest expression of goodness, auspiciousness and which is the best faith among faiths, remain victorious. II5II



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संकलनकर्त्ता:

**प्रोफेसर यू. आर डागा**

'शत्रुंझय' नन्दनवन नगर, जोधपुर

मोबाइल: 94141.28686

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org